RNI-MAHBIL/2010/33592

जैन तीर्थवंदना

वर्ष : 13 | अंक : 5 | मुम्बई, अगस्त 2023 | पृष्ठ : 32 | मूल्य : 25 | हिन्दी
VOLUME : 13 | ISSUE : 5 | MUMBAI, AUGUST 2023 | PAGES : 32 | PRICE : 25 | English Monthly

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का मुखपत्र

वीर निर्वाण संवत् 2549

श्री १००८ पार्श्वनाथ भगवान, मुख्य म्यूज़ियम, प्रतापनगरी, ओड़ीसा

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

मुखपत्र

वर्ष 13 अंक 5 अगस्त 2023

श्री शिखरचन्द पहाड़िया
अध्यक्ष

श्री प्रदीप जैन (पी.एन.सी.)
उपाध्यक्ष

श्री वसंतलाल दोशी
उपाध्यक्ष

श्री नीलम अजमेरा
उपाध्यक्ष

श्री गजराज गंगवाल
उपाध्यक्ष

श्री तरुण काला
उपाध्यक्ष

श्री संतोष जैन (पेंढारी)
महामंत्री

श्री के.सी. जैन(काला)
कोषाध्यक्ष

श्री खुशाल जैन (सी.ए.)
मंत्री

श्री विनोद कोयलावाले
मंत्री

श्री जयकुमार जैन (कोटावाले)
मंत्री

श्री महेश काला
मंत्री

प्रधान सम्पादक
प्रो. (डॉ.) अनुपम जैन, इन्दौर
सम्पादक
उमानाथ रामअजोर दुबे
सम्पादकीय सलाहकार
डॉ. अनेकान्त जैन, दिल्ली
श्री सुरेश जैन (IAS), भोपाल
श्री वसंतशास्त्री, चेन्नई
श्री धरमचंद शास्त्री, दिल्ली
श्री राजेन्द्र जैन 'महावीर', सनावद
डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर
पं. (डॉ.) महावीर शास्त्री, सोलापुर
श्री प्रकाश पापड़ीवाल, औरंगाबाद

धरती के देवता हैं दिगम्बर जैन साधु	7
शुभ भावों का सांसारिक जीवन में महत्त्व	6
मुद्रड रामलिंग वसदि में ऐतिहासिक श्रमण परम्परा का पुरातत्त्व	9
भारत के महान वैज्ञानिक विक्रम साराभाई जैन को नमन	11
श्री १००८ दिगम्बर जैन अतिशय तीर्थक्षेत्र, जवास, खैरवाड़ा, उदयपुर (राजस्थान)	17
जिला मैनपुरी में स्थित कस्बा करहल, उत्तर प्रदेश के जैन जिनालय	19
धारापत के जैन मंदिर	21
Subai Jain Temples Koraput, Odisha	26

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के सदस्य बनकर तीर्थों के संरक्षण-संवर्धन और उनके विकास में मार्ग दर्शन दीजिये

संरक्षक सदस्य	रु. 5,00,000/-	सम्माननीय सदस्य	रु. 31,000/-
परम सम्माननीय सदस्य	रु. 1,00,000/-	आजीवन सदस्य	रु. 11,000/-

नोट:

1) कोई भी फर्म, पेढ़ी, कम्पनी, धर्मादाय ट्रस्ट, संयुक्त कुटुम्ब, सोसायटी भी उपर्युक्त प्रावधान के अंतर्गत सदस्य बन सकेंगे। इस प्रकार की सदस्यता केवल 25 वर्षों के लिये होगी।
2) जो सदस्य आयकर की छूट चाहेंगे उन्हें 80जी के अंतर्गत कुछ रकम पर 80जी का लाभ मिलेगा।
3) सदस्यता से प्राप्त राशि ध्रुवफण्ड में जमा रहेगी उसके ब्याज की आय ही व्यवस्थापन एवं तीर्थक्षेत्र के संरक्षण, संवर्धन तथा उनके जीर्णोद्धार में व्यय की जायेगी।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी को प्रेषित की जाने वाली राशि बैंक ऑफ बड़ौदा, वी. पी. रोड, मुंबई के सेविंग खाता क्र. 13100100008770, IFSC CODE BARB0VPROAD अथवा बैंक ऑफ इंडिया, सी. पी. टैंक, मुंबई के खाता क्रमांक 001210100017881, IFSC CODE BKID0000012 में किसी भी शाखा में निःशुल्क जमा कराकर उसकी सूचना मुंबई कार्यालय को देने की कृपा करें।

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं, सम्पादकों का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।
किसी भी विवाद का निराकरण मुंबई न्यायालय के अधिकार क्षेत्र में होगा

कार्यालय: भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुम्बई-400004
फोन : 022-23878293 / 022-2385 9370
website : www.tirthkshetracommittee.com, e-mail : tirthvandana4@gmail.com

मूल्य
वार्षिक : 300 रुपये
त्रैवार्षिक : 800 रुपये
आजीवन (25 वर्ष) : 2500 रुपये

सादर जय जिनेन्द्र,

बंधुओं,

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी दिगम्बर जैन समाज की एकमेव राष्ट्रीय संस्था जिसका प्रमुख उद्देश्य सभी प्राचीन तीर्थक्षेत्रों का संरक्षण-संवर्धन कर उनके सम्मुनित विकास में कार्य करना है और प्रशंसनीय है कि पिछले सवा सौ वर्षों से अधिक प्राचीन यह संस्था अपने उद्देश्य में समर्पित भाव से कार्यरत है जिसमें हमारे साधु-भगवंतों, आर्यिका माताओं, भट्टारकों, त्यागीव्रतियों के साथ-साथ समाज के श्रेष्ठी दानवीर एवं धार्मिक महानुभावों और हमारे पदाधिकारियों का सराहनीय योगदान है।

हमारे जैन तीर्थ हमारी पहचान के स्तम्भ हैं या कहें कि जैन धर्म की नीव का अस्तित्व के महत्वपूर्ण तम्बू हमारे तीर्थक्षेत्र ही हैं। इन तीर्थों की सुरक्षा करना हम सबका प्रथम कर्तव्य है। पिछले कई वर्षो से हमारे तीर्थों पर असामाजिक तत्वों द्वारा अनेकों बार हड़पने या अपना कब्ज़ा जमाने के प्रयास किये जा रहे हैं जिनसे हमने कानूनी तरीके से निपटने की कोशिश की है जिनमें हमें सफलताएँ भी मिली हैं।

श्री गिरनार जी क्षेत्र हमारा एक पवित्र तीर्थक्षेत्र है हम सभी जैन भाई-बंधुओं इस तीर्थ की महिमा व महत्वता से भली भांति परिचित हैं और यह हमारे लिए खिन्नता का विषय है कि हमारे गिरनार को हमसे कई बार छीनने के प्रयत्न किये गये हैं जिसमें वहां के स्थानीय पंडो और प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्रशासन एवं सियासत हुकूमतें भी इसमें शामिल हैं।

वर्तमान में गुजरात के मुख्यमंत्री ने यात्राधाम विकास बोर्ड की बैठक में ११४ करोड़ रूपये की लागत से गिरनार पर्वत का गोरखनाथ एवं दत्तात्रेय पर्वत के रूप में विकास करने की स्वीकृति दी है जिसका समाज में विरोध भी हुआ है भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से

भी गुजरात सरकार एवं केंद्र सरकार से इस सम्बन्ध में पत्र ज्ञापित किया है। सरकार से यह निवेदन किया गया है कि यह पवित्र प्रसिद्ध जैन तीर्थक्षेत्र है जहाँ से २२ वें तीर्थंकर भगवान नेमिनाथ (अरिष्टनेमि) सहित हजारों मुनि मोक्ष गये हैं ऐसे पावन पवित्र सिद्धक्षेत्र का विकास गिरनार नेमिनाथ के रूप में ही हो न कि किसी अन्य से।

अत्यंत दु:खद समाचार प्राप्त हुआ कि ७ अगस्त को रात्रि में महावीर जी क्षेत्र के मानद मंत्री श्री महेंद्र कुमार पाटनी जी का निधन हो गया है। पाटनी जी की क्षति समस्त जैन समाज एवं महावीर जी क्षेत्र के लिए एक अपूर्णनीय क्षति है। आपके नेतृत्व, मार्गदर्शन व आपके तीर्थभक्ति एवं समर्पित भावना से श्री महावीर जी क्षेत्र के विकास में आपका महत्पूर्ण योगदान रहा है।

मैं अपनी एवं भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार की ओर से दिवंगत आत्मा के प्रति भावभीनी श्रद्धांजली अर्पित करता हूँ।

शिखरचन्द पहाड़िया
राष्ट्रीय अध्यक्ष

सादर जय जिनेन्द्र,

अत्यंत हर्ष है कि श्रावण शुक्ल सप्तमी (२३ अगस्त, २०२३) को २३ वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ का मोक्षकल्याणक का दिन है जिसे हम मोक्ष सप्तमी (मुकुट सप्तमी) के रूप में बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं। भगवान पार्श्वनाथ (पारसनाथ) की निर्वाण भूमि विश्वप्रसिद्ध श्री सम्मेदशिखर जी इस पर्वत को सारी दुनिया पारसनाथ पहाड़ के नाम से जानती है।

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी हजारों श्रृद्धालु गण मोक्षसप्तमी के दिन भगवान पार्श्वनाथ का मोक्ष कल्याणक मनाने श्री सम्मेदशिखर जी पहुंचेंगे जहाँ पर हजारों की उपस्थिति में बड़े ही हर्षोल्लास के साथ भक्ति पूर्वक अभिषेक-पूजन एवं निर्वाण लाडू चढ़ाया जायेगा। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी क्षेत्र पर पधारे सभी महानुभावों का हार्दिक अभिनन्दन करती है एवं मोक्ष सप्तमी के दिन आयोजित श्री सम्मेदशिखर जी सिद्धक्षेत्र पर निर्वाण लाडू का सीधा प्रसारण जिनवाणी चेनल के माध्यम से भी दिखाया जायेगा जिससे जो धर्मुनारागी श्री सम्मेदशिखर जी नहीं पहुँच सके हैं वो भी इस कार्यक्रम का प्रसारण देख सकें और पुण्य लाभ ले सकें।

मै आप सभी धर्मानुरागी भ्राता-भगनियों को भगवान पार्श्वनाथ (पारसनाथ) मोक्षकल्याणक (मोक्ष सप्तमी) की हार्दिक शुभकानाएं प्रेषित करता हूँ।

वर्तमान में श्री सम्मेदशिखर जी एवं श्री अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ शिरपुर का केस माननीय सुप्रीम कोर्ट में अपनी अंतिम सुनवाई के लिए लंबित है जिसकी पैरवी समय समय पर कोर्ट की तारीखों के अनुसार हो रही हैं। इन कोर्ट केसों में तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा विपुल राशि खर्च हो रही है। हमारा लक्ष्य हमारे तीर्थों को संरक्षित करना है और मेरा समाज से निवेदन है कि भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के इस कार्य में आप अपनी चंचला धनलक्ष्मी का सदुपयोग कर तीर्थक्षेत्र कमेटी को आर्थिक संबल प्रदान करें।

मुझे अत्यंत प्रसन्नता है कि सवा सौ वर्ष पहले हमारे पूर्वजों ने तात्कालिक परिस्थिति एवं दूरगामी चिंतन कर तीर्थों के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु समाज की प्रतिनिधि संस्था भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की स्थापना की और यह हमारे सभी पूर्वजों के परिश्रम, कर्तव्य निष्ठा, सेवाभाव और तीर्थक्षेत्र कमेटी के भूतपूर्व एवं वर्तमान पधिकारियों का योगदान है कि तीर्थक्षेत्र कमेटी एक विशाल वृक्ष की तरह फलित होकर अपने उद्देश्यों की पूर्ती में सतत कार्यरत है। वर्तमान में भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी में विभिन्न प्रान्तों एवं अंचलों से समाजसेवी महानुभाव इस कमेटी की सदस्यता प्राप्त कर रहे हैं मैं हमारे सभी नए सदस्य महानुभावों का हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ, स्वागत करता हूँ।

हमें पूर्ण विश्वास है आप सबके सहयोग से भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी दिनोत्तर वृद्धि कर अपने तीर्थों, मंदिरों, प्राचीन अवशेषों के संरक्षण, संरक्षित करने एवं उनके समुन्नत विकास में सदा सकारात्मक दिशा प्राप्त करेगी।

संतोष जैन (पेंढारी)
राष्ट्रीय महामंत्री

केवल चिन्ता एवं चर्चा नहीं, चिन्तन एवं क्रियान्वयन करें

भारत के समस्त दिगम्बर जैन तीर्थों की संरक्षक, देश की दि. जैन समाज की सर्वमान्य एवं प्रतिष्ठित संस्था है-भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी। विगत वर्षों में हमारी समाज के शीर्षस्थ समाजसेवियों/श्रेष्ठियों ने इस संस्था को अपना नेतृत्व प्रदान किया है। पारम्परिक रूप से देश के सर्वाधिक प्रतिष्ठित जैन धार्मिक महोत्सव 12 वर्षीय श्रवणबेलगोल महामस्तकाभिषेक का अध्यक्ष भी तीर्थक्षेत्र कमेटी का ही अध्यक्ष होता है बहन श्रीमती सरिता महेन्द्र कुमार जी जैन इस महोत्सव (2018) की अध्यक्ष रही। वर्तमान में श्री शिखरचंद जी पहाड़िया (अध्यक्ष) एवं श्री संतोष जी पेंढ़ारी (महामंत्री) के रूप में इसको नेतृत्व प्रदान कर रहे हैं।

तीर्थक्षेत्र कमेटी 2 प्रकार के दायित्वों का निर्वाह करती है।

1. तात्कालिक दायित्व-श्री सम्मेदशिखरजी, श्री गिरनार जी आदि सिद्धक्षेत्रों पर चल रहे न्यायालयीन प्रकरणों में दिगम्बर जैन समाज का पक्ष सुदृढ़ता से प्रस्तुत करना, शासन एवं विरोधी पक्ष के साथ बैठकर क्षेत्र के हित में सर्वमान्य बिन्दुओं तक पहुँचने का प्रयास करना, किसी भी क्षेत्र पर संकट होने पर वहाँ की कमेटी द्वारा सहयोग का अनुरोध प्राप्त होने पर उसे सक्रिय सहयोग एवं मार्गदर्शन देना। इस कमेटी ने स्वर्णभद्र कूट के विकास सहित सम्पूर्ण पर्वत पर जीर्णोद्धार एवं विकास का कार्य किया है। तलहटी में भी काम जारी है। अन्य तीर्थों पर तीर्थक्षेत्र कमेटी के सहयोग से हो रहे विकास कार्य इसके प्रमाण है।

2. दीर्घकालीन दायित्व-इसके अन्तर्गत तीर्थ विकास एवं जीर्णोद्धार की योजनायें बनाकर कार्य किया जाता है। आचार्य श्री कुन्दकुन्द स्वामी की जन्मभूमि कोण्ड कुण्डपुर का प्रस्तावित विकास एवं भव्य स्मारक का निर्माण इसी योजना के अन्तर्गत चल रहा है।

आगामी कुछ समय में तीर्थक्षेत्र कमेटी का पुनर्गठन होगा। तीर्थ संरक्षण एवं सर्वेक्षण का काम इन सबसे उपर होता है। कोई भी आये सभी को दिगम्बरत्व की रक्षा करनी है। तीर्थों का संरक्षण करना है। उसके मूल स्वरूप को बनाये रखकर ऐतिहासिकता एवं पुरातत्व की रक्षा करनी होगी। यह काम तो होना ही है। विकास की धारा सतत प्रवाहमान रहनी है। किन्तु मैं एक महत्त्वपूर्ण कार्य की ओर प्रबुद्ध वर्ग का ध्यान आकृष्ट कर रहा हूँ।

कई दशक पूर्व तीर्थक्षेत्र कमेटी ने भारत के समस्त दि. जैन तीर्थों का सर्वेक्षण कराया था एवं उसके प्रतिफल में प्राप्त तथ्यों को समाहित कर भारत के दिगम्बर जैन तीर्थ शीर्षक से अलग अलग अंचलों/प्रान्तों पर केन्द्रित 5 भाग प्रकाशित किये थे। अब उनमें उल्लिखित अनेक सूचनाऐं अप्रासंगिक हो गई है क्योंकि उसके बाद आवागमन, विद्युतीकरण, संचारसाधनों, आवास, भोजन व्यवस्थाओं में आमूल-चूल परिवर्तन हो चुका है। संचार के आधुनिक साधन आज न्यूनाधिक रूप में हर क्षेत्र पर

उपलब्ध हैं। प्रायः हर यात्री की जेब में अब मोबाइल रहता ही है अतः अब इस बाबत समयानुकूल जानकारियों सहित इन पाँचों भागों का पुनर्लेखन एवं प्रकाशन जरूरी है। मेरे ग्वालियर के एक वरिष्ठ मित्र ने इस बाबत चिन्तन करने की प्रेरणा दी तो मैंने पाया कि उनका सुझाव अच्छा है। इतिहास तो वही रहेगा किन्तु नवीन मन्दिरों का विवरण बदल जायेगा। नये-नये मन्दिर, अतिथिगृह, यात्रीनिवास बन गये है। इन सबको समाहित करते हुए दि. जैन तीर्थ निर्देशिका (इन्दौर) प्रकाशित की जा चुकी है। इसमें सभी आवश्यक जानकारियाँ हैं। इसके अलावा भी इसी प्रकृति की कई अन्य पुस्तकें अ.भा.दि. जैन परिषद के भाई सुभाष जी एवं श्री आर.के. जैन साहब कोटा द्वारा छापी गई है सभी उपयोगी एवं अपने-अपने वैशिष्ट्य से समाहित हैं। विगत दिनों कल्याणक क्षेत्र नाम से एक नवीन पुस्तक प्रकाश में आई है किन्तु भारत के दि. जैन तीर्थ अत्यन्त विस्तृत, प्रामाणिक एवं ऐतिहासिक तथ्यों से परिपूर्ण है। उनका अपना महत्व है वह सन्दर्भ ग्रंथ हैं तथा तीर्थ निर्देशिका आदि पुस्तकें तीर्थ यात्रियों के लिए आवश्यक जानकारी देने वाली पुस्तक है।

चेन्नई के श्री जैन प्रार्थना मंदिर ट्रस्ट (रजिस्टर्ड) द्वारा प्रकाशित पुस्तक (जैन) तीर्थ दर्शन भाग 1-3 मुझे देखने को मिले। उसमें दिगम्बर एवं श्वेताम्बर दोनों तीर्थों का विवेचन दिया गया है पुस्तक मोटे आर्ट पेपर पर बहुरंगी है। प्रस्तुति सुन्दर है मूर्तियों के चित्र भी आकर्षक हैं। जो क्षेत्र पूर्णतः दिगम्बर हैं या श्वेताम्बर है उनकी बात तो ठीक है किन्तु ऐसे क्षेत्र हैं जो दिगम्बर एवं श्वेताम्बर दोनों परम्पराओं में पूज्य हैं वहाँ प्रमुखता श्वेताम्बर मान्यता एवं पक्ष को दी गई है। ऐसी कृतियाँ भविष्य हेतु इतिहास बनाती है। हमें वास्तविक तथ्यों को समाहित करते हुए आवश्यक प्रकाशन करने चाहिए। जिससे इतिहास सुरक्षित रहे।

आज इस बात की जरूरत है कि एक व्यापक सर्वेक्षण किया जाये।

इस सर्वेक्षण के माध्यम से हमें अपने समस्त तीर्थों (सिद्धक्षेत्र, जन्मभूमियों, अन्य कल्याणक क्षेत्र, अतिशय क्षेत्र, कलाक्षेत्र, नवोदित तीर्थ) के बारे में निम्न जानकारियाँ एकत्रित करना अपेक्षित होगा।

1. पौराणिक एवं ऐतिहासिक उल्लेख
2. तीर्थ विषयक किंवदन्तियाँ, अंचल में प्रचलित कथाएँ, गीत
3. क्षेत्र एवं समीपवर्ती अंचल का पुरातत्व
4. क्षेत्र पर स्थित मन्दिर, चरणचिन्ह, जिनबिम्ब, मानस्तम्भ
5. क्षेत्र पर उपलब्ध भोजन, जलपान एवं आवासादि सुविधायें
6. पुस्तकालय, वाचनालय, शोध संस्थान, औषधालय, प्रशिक्षण

केन्द्र आदि

7. क्षेत्र की भूमि का सम्पूर्ण विवरण, रजिस्ट्री, पट्टा, जियो टैगिंग आदि का पूर्ण विवरण। शासकीय अभिलेखों में प्रविष्टियाँ हैं या नहीं?
8. क्षेत्र पर चल रहा अतिक्रमण, न्यायालयीन प्रकरण (यदि कोई हो)
9. महत्त्वपूर्ण चित्र, शिलालेख एवं प्रशस्तियों के चित्र तथा अन्य उल्लेखनीय बिन्दु

हमारे पूर्व अध्यक्ष श्री आर.के. जैन साहब के समय यह योजना बनी थी किन्तु क्रियान्वयन न हो सका। इस अन्तराल में परिस्थितियाँ सतत विकट होती जा रही है। हमारे क्षेत्रों का पुरातत्व नष्ट किया जा रहा है। विधर्मियों द्वारा हमारी भूमि पर अतिक्रमण हो रहे हैं। तीर्थ यात्रियों पर हमले हो रहे है। अब तो हमारे जीवन्त तीर्थ मुनिराजों की हत्या भी हो गई। मूर्तियों की चोरी तो सतत चल ही रही हैं। शिरपुर अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ, केसरिया जी, गिरनार जी के हालात पर मैं क्या लिखूँ आप सबको सब मालूम ही है। ऐसे में हमें अपने दस्तावेजों को मजबूत करने के साथ ही वैयक्तिक मतभेदों को भुलाकर संगठित होना जरूरी है। तीर्थों के अधूरे रिकार्ड वक्त आने पर हमारा साथ नहीं दे पाते। अतः हमें स्थायी नीति के तहत अंचलवार सर्वेक्षण का काम हाथ में लेना चाहिए। यह कार्य आवष्यक ही नहीं अपरिहार्य है। कोई भी कमेटी हो, श्रमसाध्य, समयसाध्य एवं व्ययसाध्य होने के बावजूद यह कार्य जरूरी है।

शीतलतीर्थ में होगा भट्टारक सम्मेलन

चर्या शिरोमणि आचार्य श्री विशुद्धसागरजी महाराज के दर्शनों हेतु शीतलतीर्थ रतलाम का एक प्रतिनिधि मण्डल अधिष्ठात्री डॉ. सविता जैन के नेतृत्व में बड़ौत गया। मण्डल में महोत्सव के संयोजक श्री नरेन्द्र रारा (गौहाटी), महामंत्री डॉ. अनुपम जैन (इन्दौर), कोषाध्यक्ष श्री महावीर गाँधी (रतलाम), प्रचार मंत्री श्री राकेश चपलमन (कोटा) तथा रतलाम के अन्य

फोल्डर का अवलोकन करते आचार्य श्री

दीप प्रज्जवलित करते डॉ. अनुपम जैन एवं अन्य

अनेक श्रेष्ठी मौजूद थे। डॉ. अनुपम जैन ने दीप प्रज्जवलन कर धर्मसभा का शुभारम्भ किया। पूज्य आचार्य श्री ने कहा कि आगामी 22-26 फरवरी 2024 में होने वाले पंचकल्याणक में वहाँ अतिशय जरूर होंगे क्योंकि वह आचार्य योगीन्द्रसागरजी की कर्मस्थली है। पूज्य गुरुवर फरवरी 24 के उत्तरार्द्ध में महोत्सव को सान्निध्य प्रदान करने हेतु ससंघ पधारेंगे। उनके उपसंघ तो जनवरी-24 की शुरुआत में ही वहाँ आ जायेंगे। महोत्सव की पूर्व बेला में वहाँ विद्वत् सम्मेलन, युवा सम्मेलन, पत्रकार सम्मेलन तथा पंचकल्याणक के मध्य महिला सम्मेलन भी होंगे। सबसे प्रमुखता से भट्टारक सम्मेलन होगा जिसमें सभी पूज्य भट्टारकों को सादर आमंत्रित किया जा रहा है इस प्रकार यह पंचकल्याणक अतिविशिष्ट होगा।

पूज्य आचार्य श्री कामकुमारनन्दी जी की हत्या-विधर्मियों द्वारा अतीत में दि. जैन संतों पर उपसर्ग एवं हत्या की बात तो पढ़ी थी किन्तु प्रजातन्त्र में भी हमारे मुनि की हत्या हो जायेगी, यह तो सोचकर भी सिहरन होती है। हमें संगठित रहकर इस विषय में सजग रहना है जिससे दोषी को ऐसा कठोरतम दण्ड मिले जिसे देखकर कोई स्वप्न में भी ऐसी बात न सोचे।

एक अन्य पक्ष जिस पर हमें गम्भीरता से विचार करना चाहिए वह यह है कि हम अपने संतों को अकेले क्यों छोड़ देते हैं? वैयावृत्ति करने वाले युवाओं अथवा क्षेत्र के कार्यकर्ताओं को पूज्य संतों के कक्ष/भवन के आस-पास ही विश्राम करना चाहिए जिससे असामाजिक तत्वों में भय बना रहे।

काश! अगर कोई वहाँ सो रहा होता तो यह दुष्कृत्य न हो पाता।

जिन जिन स्थानों पर पूज्य संतों के वषायोग हो रहे हैं वहाँ की समाज से अनुरोध है कि पूज्य मुनिराजों/आर्यिका माताओं के सान्निध्य में होने वाली प्रमुख गतिविधियों के समाचार जैन तीर्थ वन्दना में प्रकाशनार्थ भिजवाने का कष्ट करें।

डॉ. अनुपम जैन,
ज्ञानछाया, डी-14, सुदामानगर, इन्दौर-452 009 (म.प्र.)
मो.: 94250 53822

धरती के देवता हैं दिगम्बर जैन साधु

-डॉ सुनील जैन संचय, ललितपुर

दिगम्बर जैन साधु, श्रमण वर्तमान में सचमुच में धरती के देवता हैं। उनकी कठिन चर्या देखकर लोग दांतों तले ऊँगली चबा लेते हैं। आज के समय का सबसे बड़ा चमत्कार है दिगम्बर जैन साधु क्योंकि आज के आधुनिक जीवन में हर कोई अपने शरीर को सजाने संवारने में लगा है, तरह- तरह के फैशनेबल कपड़े पहनने में लगा है, बालों को भी अपने-अपने ढंग से बनवाने में लगा है, ना जाने कितनी तरह के शैम्पू और साबुनों का इस्तेमाल कर रहा है, क्रीम- पाउडर और खूशबूदार तेलों को बदन पर रगड़ने में लगा है, दिन रात तरह- तरह के व्यंजनों को खाने में लगा है ऐसे में दिगम्बर साधु आज भी दिगम्बर अवस्था में रह कर एक समय ही आहार- पानी लेकर त्याग- तपस्या में लीन रह कर समाज और संस्कृति को सदमार्ग दिखा रहे हैं। धर्म- पुण्य कार्यों को करने के लिए लगातार प्रेरित करने में लगे हैं। इस कलिकाल में, आधुनिक युग और पश्चिम संस्कृति के प्रभाव से घिरे इस समाज के बीच में दिगम्बर साधुओं का रहना ही अपने आप में ही किसी चमत्कार से कम नहीं है। कडाके की सर्दी हो, भीषण गर्मी या तेज बरसात हो आम व्यक्ति हर तरह की सुविधाओं से लैस होकर निकलता है। सर्दी में ऊनी वस्त्रों से लद जाता है, गर्मी में पंखे, कूलर और ऐसी का इस्तेमल करता है, बरसात में छाते और रेनकोट का इस्तेमाल करता है फिर भी वह परेशान दिखाई देता है लेकिन इसके उलट दिगम्बर साधु बारह महीनों सर्दी, गर्मी और बरसात में एक ही अवस्था में रह कर पैदल ही विहार करते हैं। यह चमत्कार इसलिए सम्भव है कि दिगम्बर साधु सिर्फ और सिर्फ परमात्मा की भक्ति करता है, परमात्मा के चरणों में रहता है, सांसारिक मोह- माया से परे रह कर त्याग और कड़ी तपस्या करता है।

सभी सम्प्रदाय के लोग दिगम्बर जैन संत की कठोर तपश्चर्या से को देखकर आश्चर्यचकित हो जाते हैं। हाल ही में बागेश्वर धाम के बाबा धीरेन्द्र शास्त्री जी ने अपने वक्तव्य में कहा था कि दिगम्बर जैन साधु की चर्या वर्तमान में विश्व के लिए शोध का विषय है।

महाभारत में कहा है कि युद्ध के लिये प्रस्थान के समय श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं-

"आरोरूह रथं पार्थ ! गांडीवं चापि धारय।
निर्जितां मेदिनीं मन्ये निर्ग्रंथो गुरुरग्रत:।"

हे अर्जुन ! तुम रथ पर चढ़ जाओ और गांडीव-धनुष को भी धारण करो। मैं इस पृथ्वी को जीती हुई ही समझ रहा हूँ चूंकि निर्ग्रंथ मुनि सामने दिख रहे हैं।

ज्ञानार्णव-चूंकि इस पृथ्वीतल पर विहार करते हुए ये मुनि पंचेंद्रिय से लेकर वनस्पति, वृक्ष, अग्नि आदि एकेंद्रिय जीवों तक की रक्षा करते हैं उन्हें अभयदान-जीवनदान देते हैं, ये परमकारुणिक मुनि विश्ववंद्य, जगद्गुरु भी कहलाते हैं क्योंकि इनका धर्म सभी जीवों का हित करने वाला होने से वह सार्वधर्म या विश्वधर्म कहलाता है। इन मुनियों की चर्या कैसी होती है, देखिये-

जीवनचर्या- ये जिन गुणों का पालन करते हैं उन्हें मूलगुण कहते हैं। जैसे मूल के बिना वृक्ष की एवं नींव के बिना महल की स्थिति नहीं है उसी प्रकार से इन गुणों के बिना कोई भी व्यक्ति वेषमात्र से साधु नहीं हो सकता है। इन मूलगुणों के अट्ठाईस भेद होते हैं।

पांच महाव्रत, पांच समिति, पांच इन्द्रियनिरोध, केशलोंच, षट् आवश्यक, आचेलक्य, अस्नान, क्षितिशयन, अदंतधावन, स्थितिभोजन और एकभुक्त।

ऐसी कठोर चर्या के पालक दिगम्बर जैन संतों के बारे में कोई अनर्गल प्रलाप करे तो यह श्रमण संस्कृति के लिए खतरा और समाज को चिंता तथा मंथन का विषय है।

ऐसे महान दिगम्बर साधुओं पर वर्तमान में कतिपय असामाजिक तत्व अभद्र टिप्पणी कर रहे हैं जो घोर निंदनीय है। पिछले दिनों कर्नाटक में आचार्य श्री कामकुमार नंदी जी की निर्मम हत्या उसके बाद हाल ही में एक कथा वाचक द्वारा जैन संतों के दिगम्बर स्वरूप पर की गई टिप्पणी और कटनी में एक महिला द्वारा दिगम्बर जैन साधु की प्रवचन सभा में पहुँचकर अभद्र, अशोभनीय टिप्पणी करना घोर निंदनीय है। (कथा वाचक द्वारा समाज से सार्वजनिक रूप से क्षमा याचना की जा चुकी है)

संतों की सुरक्षा के लिए हों कटिबद्ध :

समाज को भी गंभीरता से चिंतन करना होगा। साधु संतों के आहार-विहार-निहार के लिए जागरूक होना होगा ताकि किसी अप्रिय घटना से बचा जा सके। साधु, संतों के विहार में अक्सर समाज की लापरवाही देखी जाती है जिसपर चिंतन जरूरी है। जब भी साधु का विहार हो संबंधित एरिया की जैन समाज का दायित्व बनता है कि स्थानीय पुलिस प्रशासन को भी उनके विहार कार्यक्रम की डिटेल दे, यदि पुलिस प्रशासन के संज्ञान में साधु का विहार होगा तो वह सुरक्षा के इंतजाम भी करेगी, साधु की सुरक्षा की जिम्मेदारी प्रशासन से कहीं अधिक समाज की है।

जब कोई अप्रिय घटना घट जाती है तो हम निंदा आदि प्रस्ताव पास करके हम कुछ नहीं कर पा सकने की निराशा से ऊपर उठने की कोशिश और कुछ तो किया की संतुष्टि में अक्सर एक साथ जी लेते हैं। आखिर यह सब कब तक! अब हमारी समाज को निर्णायक फैसले लेना होगा।

हम अपनी विरासत बचाने को आगे आएं। इसकी रक्षा करने के लिए हमे संकल्पित होना होगा। मात्र प्रस्ताव पास करने या व्हाट्सएप, फेसबुक पर ज्ञान बाटने की आदत से बाहर निकलकर कुछ सार्थक निर्णायक कदम उठाना आज की महती आवश्यकता है।

साधु संस्था की गरिमा को बचाए रखना समाज की प्राथमिकता होनी चाहिए क्योंकि दिगम्बर जैन धर्म की पहचान हमारे साधु संस्था से ही है।

यदि अब भी न जागे जो मिट जाएंगे खुद ही।
दास्तां तक भी न होगी, हमारी दास्तानों में।।
आज हम सभी को आत्मावलोकन करने की जरूरत है।
कुहासां आसमां पर छा रहा है और हम चुप हैं।
अंधेरा धूप को धमका रहा है और हम चुप हैं।।

शुभ भावों का सांसारिक जीवन में महत्त्व

डॉ. नरेन्द्र जैन भारती "सनावद"

मनुष्य के जीवन में साधना और भावना का विशेष महत्त्व है। जिसकी जैसी भावना होती है वैसी उसकी साधना होती है। निमित्त भी वैसा ही मिलता है। संसार में जैसे ही मानव जन्मता है, उसी के साथ उसके मन में विभिन्न विचार प्रकट होते हैं और नष्ट होते रहते हैं लेकिन जिसका मन जिस विचार पर केंद्रित हो जाता है वह विचार स्थायित्व की ओर आगे बढ़ जाता है। आत्मा तदनुसार कार्य करने लगती है। शरीर को उस ओर लगाना मन का कार्य होता है। अतः आवश्यक है कि मन में ऐसे विचारों का आगमन हो जो मन को पवित्र बनाए रखे। पवित्र विचारों की साधना ही संस्कारों को जन्म देती है।

संस्कारों के बीजारोपण के लिए धार्मिक वातावरण का मिलना जरूरी है। किसी भी जीव को शरीर मिलना स्वाभाविक है। नामकर्म के शुभोदय से सुंदर शरीर मिलता है और अशुभोदय से विकृत शरीर मिलता है। शरीर की सुंदरता तो बाह्य है लेकिन जिसके विचार,वाणी और व्यवहार मधुर होता है उससे व्यक्ति के मनोभावों की पहचान होती है। मन के विचारों से संसारी आत्मा प्रभावित होती है अतः शरीर की साधना मन के विचारों पर निर्भर है लेकिन यह सत्य है कि साधना से ही संस्कार पडते हैं। निमित्त के मिलने पर मन वैसा कार्य करने लगता है। अतः शुभभावों का शांति की प्राप्ति में विशेष महत्व है भगवान महावीर स्वामी कहते हैं -

अप्पा कत्ता विकत्ता य, दुहाण य सुहाण य।
अप्पा मित्तममित्तं च, दुप्पटिठय सुप्पटिठओ।।

आत्मा ही सुख-दुख का कर्त्ता है और आत्मा ही भोक्ता है। सत्प्रवृत्ति में स्थित आत्मा अपना ही मित्र और दुष्प्रवृत्ति में स्थित आत्मा अपना ही शत्रु है। यहाँ भगवान महावीर स्वामी कहते हैं कि तुम ही कर्त्ता और तुम ही भोक्ता हो। तुम

जो भी कर रहे हो वही तुम्हारे सुख दुख का कारण है। मन व्यक्ति को भाव बंध कराता है और आत्मा तदनुसार विभिन्न प्रवृत्तियों में बंधनबद्ध होकर संसार में भटकती रहती है। अतः मनुष्य की प्रवृतियां अच्छी हो इसलिए जीवन में धर्म का पालन जरूरी है। धर्म पुरुषार्थ हमें जगत में रहते हुए भी सद कार्यों के लिए प्रेरित करता है अतः मन को धर्म मार्ग पर चलाने के लिए संयम और तप की साधना जरूरी है। इन्हीं साधनाओं के लिए व्यक्ति सांसारिक जीवन की मोहमाया का त्याग कर मुनि बनकर शरीर से आत्म कल्याण के लिए साधना करता है। उनकी यह साधना उन के संस्कारों का साक्षात् दर्शन कराती हैं। हिंसा न करने के भाव यदि रहते हैं, असत्य से बचने के भाव बनते हैं, चोरी न करने का विचार रखते हैं, बृह्मचर्य का भाव मन में रहता है तथा संग्रहवृत्ति की अपेक्षा परोपकार के लिए दान देने की प्रवृत्ति बढ़ती है तो यह सब धार्मिक संस्कारों का ही प्रभाव है। अतः प्रत्येक परिवार के मुखिया का यह कर्त्तव्य होता है कि वह परिवार के सदस्यों को ऐसा वातावरण दे, ताकि उसकी प्रवृत्ति धर्म में लगी रहे। नैतिकता और सदाचार उसके जीवन के अंग रहे। मन में सदाचारों का वास होगा तो वह कालांतर में सुख शांति का कारण बनेगा। अतः धर्म की साधना के लिए नियमित धर्म करना चाहिए। अभिषेक,पूजा, पाठ, स्वाध्याय, ध्यान और दान के सभी कार्य धार्मिक प्रवृत्तियों में बने रहने के लिए आवश्यक होती है।

अतः मनुष्य को पुण्य कर्म कर जीवन को लक्ष्य प्राप्ति के लिए समर्पित करना चाहिए। सदा जीवन उच्च विचार के आदर्शों को उपस्थित कर जीवन को आगे बढ़ाना चाहिए। ताकि आत्मा का कल्याण हो सके।

वरिष्ठ कांग्रेस नेता और पूर्व राष्ट्रीय सचिव संजय बापना ने लिया मुनि सुधा सागर महाराज का आशीर्वाद

वरिष्ठ कांग्रेस नेता और पूर्व राष्ट्रीय सचिव संजय बापना बुधवार को आगरा में चातुर्मास कर रहे दिगंबर जैन मुनि सुधा सागर महाराज के दर्शनों के लिए पहुंचे। इस दौरान संजय बापना ने लगभग आधे घण्टे तक मुनि श्री से संवाद किया और जैन धर्म के सिद्धांतों के बारे में जानकारी ली, इस दौरान संजय बापना के साथ दिगंबर जैन सोश्यल महानगर अध्यक्ष संजय जैन आंवा वाले ३ आदि भी दर्शनों के लिए आगरा पहुंचे। आगरा पहुंचने पर चातुर्मास कमेटी के अध्यक्ष, मंत्री और सदस्यों द्वारा संजय बापना का सम्मान किया गया।

मुद्गड़ रामलिंग वसदि में ऐतिहासिक श्रमण परम्परा का पुरातत्त्व

डॉ. महेन्द्रकुमार जैन 'मनुज', इन्दौर

जैन धर्म का वर्चस्व चालुक्य और राष्ट्रकूट शासकों के शासन काल में अपने चरम पर था और इन शासकों के संरक्षण के परिणाम स्वरूप आधुनिक कर्नाटक, महाराष्ट्र और आंध्र राज्यों में कई स्मारकों, प्रतिमाओं और मंदिरों का निर्माण हुआ। विद्वानों और इतिहासकारों के अनुसार आधुनिक लातूर शहर राष्ट्रकूट राजाओं का उद्गम स्थल रहा है और यह तथ्य कई शिलालेखों और प्रमाणों के आधार पर पुष्ट है। समय के साथ साथ राष्ट्रकूट शासकों ने अपनी राजधानी को कई स्थानों पर स्थानांतरित किया परन्तु दक्षिणी महाराष्ट्र, उत्तर पूर्व कर्नाटक और पश्चिमी आंध्र पर इन शासकों की मजबूत पकड़ रही। कल्याणी के चालुक्य शासकों ने भी इस क्षेत्र पर शासन किया, जहाँ उनके शासनकाल ने कई शानदार मंदिरों, प्रतिमाओं और स्मारकों का उपहार दिया है। उनके राज्य की राजधानी कल्याणी थी जो आज बासव कल्याण के नाम से जाना जाता है और कर्नाटक राज्य में स्थित है।

मुद्गड रामलिंग नामक स्थान महाराष्ट्र राज्य के लातूर जिले में स्थित है। यह स्थान लातूर जिला मुख्यालय से करीब 67 किलोमीटर की दूरी पर दक्षिण दिशा में स्थित है और उस्मानाबाद जिला मुख्यालय से लगभग 110 किलोमीटर की दूरी पर दक्षिण पूर्व दिशा में स्थित है। इस स्थान पर कई प्राचीन जैन अवशेष शिलालेख और खंडित प्रतिमाओं के रूप में देखे जा सकते हैं। वर्तमान में इस ग्राम में एक छोटा सा जैन मंदिर है जो कि नई चाकुर और कासार सिरसी को जोड़ने वाली सड़क के पास में स्थित है। इस ग्राम में स्थित जैन मंदिर 23 वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ भगवान को समर्पित है।

यह श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर नाम से जाना जाता है।

मुख्य कायोत्सर्ग तीर्थंकर पार्श्वनाथ-

तीर्थंकर पार्श्वनाथ की प्रतिमा लगभग 5 फीट की कायोत्सर्ग अवस्था में विराजमान है। यह काले पाषाण से निर्मित है। भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा अत्यंत मनोहारी है। इस प्रतिमा के मस्तक को सात फण वाले सर्प के फणों से आटोपित दर्शाया गया है। वह सर्प प्रतिमा के पृष्ठ भाग से कुण्डली बनाते हुए पादद्वय तक टंकित किया गया है। पार्श्वों में उसकी कुण्डली स्पष्ट दृष्टव्य है। चँवरधारियों के स्थान पर इसके पार्श्वों में धरणेन्द्र पद्मावती चँवर ढुराते दर्शाये गये हैं। वाम भाग में पद्मावती है और दक्षिण में धरणेन्द्र। प्रभावल सामान्य है, परिकर में वितान में उड्डीयमान माल्यधर देव देव दोनों ओर दर्शाये अंकित हैं। इस प्रतिमा के वक्ष पर श्रीवत्स का चिह्न नहीं है।

कायोत्सर्ग तीर्थंकर पार्श्वनाथ द्वितीय प्रतिमा-

उपरोक्त मूलनायक पार्श्वनाथ की भांति एक और कायोत्सर्ग प्रतिमा है। इसमें भी मस्तक पर सप्त सर्पफण और परिकर में चँवरी निर्मित हैं। मस्तक आदि कुछ खंडित होने से यह संग्रह में रखी गई है। यह भूरे बलुआ पाषाण के शिलाखण्ड में निर्मित है।

दो पद्मासन तीर्थंकर पार्श्वनाथ प्रतिमाएँ-

इसी संग्रह में दो पद्मासन तीर्थंकर पार्श्वनाथ प्रतिमाएँ हैं। एक काले पाषाण में निर्मित है जो थोड़ी अर्वाचीन है। कुछ खण्डित होने से यह संग्रह में रखी है अर्थात् इसकी नियमित पूजा नहीं होती है। दूसरी पद्मासन प्रतिमा का स्कंधों से ऊपर का खण्डित भाग नहीं है। हाथ भी खण्डित हैं, किन्तु इस प्रतिमा के दोनों पार्श्वों में से सर्पकुण्डली का अवशेष देखा जा सकता है, इसलिए यह तीर्थंकर

पार्श्वनाथ की प्रतिमा निश्चित की जा सकती है।

तीर्थंकर छवि युक्त दो स्तंभ-

एक प्रस्तर में कायोत्सर्ग तीर्थंकर उत्कीर्णित हैं, तीर्थंकर प्रतिमाओं के सर्प-फणाटोप देखा जा सकता है। दूसरा स्तंभ मानस्तंभ या कुछ स्तूप के आकर का है। इसके उपरिम भाग में तो चारों ओर एक एक पद्मासन तीर्थंकर निर्मित हैं किन्तु उनसे नीचे के स्थान में एक दिशा में समानान्तर दो कायोत्सर्ग तीर्थंकर प्रतिमाएं है, एक दिशा में एक पद्मासन तीर्थंकर प्रतिमा दर्शायी गई है और शेष दो दिशाओं की निर्मिति अदृष्ट है।

मंदिर प्रांगण के इस संग्रह में एक और शिलाफलक है जो किसी स्तंभ का ही भाग जान पड़ता है। इसमें भी सप्तफणाटोपित कायोत्सर्ग तीर्थंकर प्रतिमा है।

इस मुद्गड रामलिंग ग्राम में जैन समाज का एक भी घर नहीं है और पूजा पाठ - अभिषेक आदि क्रिया के लिए पास स्थित ग्राम कासार सिरसी से पुजारी आता है। दर्शनार्थियों के लिए जैन मंदिर की चाबी पास स्थित मकान पर रहती है। जैन मंदिर का जीर्णोद्धार कुछ वर्ष पूर्व अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महासभा की सहायता से किया गया था। इस ग्राम के आस पास नई चाकुर और कासार सिरसी जैसे तीर्थ भी स्थित हैं।

भारत के महान वैज्ञानिक विक्रम साराभाई जैन को नमन

विजय कुमार जैन राघौगढ़ म.प्र.

प्रसिद्ध वैज्ञानिक विक्रम साराभाई

भारत माता के महान सपूत जिन्होंने अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान के क्षेत्र में दुनिया में देश का नाम ऊंचा किया ऐसे विक्रम अंबालाल साराभाई जैन का 12 अगस्त 1912 को जन्म हुआ था। जन्म दिवस के अवसर पर हम उन्हें स्मरण कर रहे हैं।

डॉ. विक्रम साराभाई के नाम को अंतरिक्ष कार्यक्रम से अलग नहीं किया जा सकता यह बात दुनिया को पता है की वह विक्रम साराभाई ही थे, जिन्होंने अंतरिक्ष अनुसंधान के क्षेत्र में भारत को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान दिलाया।आपका जन्म अहमदाबाद में श्री अंबालाल साराभाई के प्रतिष्ठित जैन परिवार में हुआ था।आपकी माता जी श्रीमती सरला साराभाई थी। आपकी माता सरला साराभाई ने प्रारंभिक शिक्षा मैडम मारिया मांटेसरी के पारिवारिक स्कूल में दिलाई।गुजरात कॉलेज में इंटरमीडिएट तक विज्ञान की शिक्षा पूरी करने के बाद वे सन 1937 में कैंब्रिज इंग्लैंड चले गए, जहां 1940 में प्रणमाकृतिक विज्ञान में ट्रायपोज डिग्री प्राप्त की। द्वितीय विश्व युद्ध शुरू होने पर वे भारत लौट आए और बेंगलूरू स्थित भारतीय विज्ञान संस्थान में नौकरी करने लगे। जहां पर वह सी. वी. रमन के निरीक्षण में कॉस्मिक रेंज पर अनुसंधान करने लगे। द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति पर वे कॉस्मिक रेज भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में अपनी डॉक्ट्रेट पूरी करने के लिए कैंब्रिज लौट गए। सन् 1947 में उष्णकटिबंधीय अक्षांश ट्रॉपीकल लैटीट्यूड्स में कैंब्रिज विश्वविद्यालय ने उन्हें डॉक्ट्रेट की उपाधि से सम्मानित किया गया।

डॉ. विक्रम साराभाई को भारत के महान संस्थान निर्माता माना जाता है। उनके द्वारा स्थापित लोकप्रिय संस्थानों में प्रमुख हैं भौतिकी अनुसंधान प्रयोगशाला (पीआरएल) अहमदाबाद, भारतीय प्रबंध संस्थान आई आई एम अहमदाबाद, सामुदायिक विज्ञान केंद्र अहमदाबाद,दर्पण अकादमी फॉर परफॉर्मिंग आर्ट्स अहमदाबाद, विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र तिरुअनंतपुरम्, डॉ विक्रम साराभाई सांस्कृतिक गतिविधियों में भी गहरी रूचि रखते थे। वे संगीत, फोटोग्राफी, पुरातत्व, ललित कलाओं और अन्य अनेक क्षेत्रों से जुड़े रहे। डॉक्टर विक्रम साराभाई के व्यक्तित्व का सर्वाधिक उल्लेखनीय पहलू उनकी रुचि की सीमा और विस्तार तथा ऐसे तरीके थे, जिन्होंने अपने विचारों को संस्था में परिवर्तित किया।सृजनशील वैज्ञानिक, सफल और दूरदर्शी उद्योगपति, उच्च कोटि के प्रवर्तक, महान संस्थाओं के निर्माता, अलग किस्म के शिक्षाविद, कला पारखी, सामाजिक परिवर्तन के ठेकेदार, अग्रणी प्रबंध प्रशिक्षक आदि ऐसी अनेक विशेषताएं उनके व्यक्तित्व में समाहित थी। उनकी सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह थी कि वे एक ऐसे उच्च कोटि के इंसान थे जिसके मन में दूसरों के प्रति असाधारण सहानुभूति थी, जो भी उनके संपर्क में आता उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रहता था। धर्मपत्नी श्रीमती मृणालिनी साराभाई के साथ मिलकर उन्होंने मंच कलाओं की सांस्कृतिक संस्था दर्पण का गठन किया। उनकी बेटी मल्लिका साराभाई बड़ी होकर भरतनाट्यम् और कुचिपुड़ी की प्रसिद्ध नृत्यांगना बनी। डॉक्टर होमी जे भाभा की जनवरी 1966 में मृत्यु के बाद डॉक्टर साराभाई को परमाणु ऊर्जा आयोग का अध्यक्ष बनाया गया।

साराभाई ने सामाजिक और आर्थिक विकास की विभिन्न गतिविधियों के लिए अंतरिक्ष विज्ञान और प्रौद्योगिकी में छुपी हुई व्यापक क्षमताओं को पहचान लिया था। इन गतिविधियों में संचार, मौसम विज्ञान संबंधी भविष्यवाणी और प्राकृतिक संसाधनों के लिए अन्वेषण आदि सम्मिलित हैं।भारत के महान वैज्ञानिक बहुमुखी प्रतिभा के धनी डॉक्टर विक्रम साराभाई का 30 दिसंबर 1971 को कोवलम्, तिरुअनंतपुरम् केरल में आसामयिक स्वर्गवास हो गया।इस महान वैज्ञानिक के सम्मान में तिरुअनंतपुर में स्थापित थुंबा एक्वेटोरियल रॉकेट लॉन्चिंग स्टेशन टी आर एल एस और संबंधी अंतरिक्ष संस्थाओं का नाम बदलकर विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र कर दिया गया। यह केंद्र एक प्रमुख भारतीय अंतरिक्ष केंद्र के रूप में उभरा है।सन 1974 में सिडनी स्थित अंतर्राष्ट्रीय खगोल विज्ञान संघ ने निर्णय लिया कि सीआफ सेरेनिटी पर स्थित बेसल नामक मून क्रेटर अब साराभाई क्रेटर के नाम से जाना जाएगा।

डॉ विक्रम साराभाई को भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम का जनक माना जाता है। अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में उनके अमूल्य योगदान को भारतवासी हमेशा याद रखेंगे। उनका जीवन एवं अनुसंधान कार्य आज की युवा पीढ़ी के लिए निश्चित ही प्रेरणादायक है जन्मदिन पर हम डॉक्टर विक्रम साराभाई को विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं

नोट-लेखक स्वतंत्र पत्रकार एवं भारतीय जैन मिलन के राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष है।

सामूहिकता में विश्वास करके ही हम समाज का विकास कर सकते हैं :- विजय जैन, राष्ट्रीय अध्यक्ष - जैन मिलन

वर्तमान की आवश्यकता है कि जैन समाज को अलग-अलग ना होकर एकजुटता दिखाकर कार्य करना होगा, हम सब महावीर के अनुयायी हैं और जीवन उपयोगी एक जैसे सिद्धांतों का पालन करते हैं इसलिए हमें सामूहिकता की ओर बढ़ना होगा।

यह बात जैन मिलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष अतिवीर विजय जैन ने स्थानीय विजय नगर में स्थित पंच बालयति मंदिर में आयोजित समग्र जैन समाज की बैठक में कहीं उन्होंने कहा कि

हमारे दादा महावीर के हम वंशज हैं और उन्हीं के सिद्धांतों पर हम देश और समाज का विकास कर रहे हैं इसलिए अब हमें दिगंबर श्वेतांबर नहीं बल्कि जैन समाज बनकर कार्य करना होगा।

कार्यक्रम में श्वेतांबर जैन समाज से कान्तिलाल वम, कैलाश नाहर ने कहा कि लोकतंत्र में बुद्धि बल नहीं बल्कि गण बल प्रमुख होता है हम लोग अल्प मात्रा में होते हुए भी देश के विकास में वृहत स्तर पर सहयोग करते हैं।

ब्रह्मचारी जिनेश भैया एवं सुरेश भैया जी ने संगठन बनाने एवं समाज के लिए कार्य करने हेतु युवाओं से अपील की।

दिगंबर जैन समाज के हंसमुख गांधी ने बताया कि समाज के मुनियों पर कर्नाटक में हुए उपसर्ग को लेकर जैन समाज सरकार के रवैया से नाराज हैं सरकार को इस दिशा में तुरंत कार्य करना होगा।

भोपाल से पधारे मनोज जैन ने भी एक व्यापक अहिंसक समाज आंदोलन की आवश्यकता पर बल दिया।

ग्वालियर से पधारे भारतीय जैन मिलन के राष्ट्रीय संयुक्त मंत्री वीर राजेश जैन बंटी ने अहिंसक समाज के ऊपर इस तरह के कुठाराघात पर कड़ाई से कार्रवाई करने के लिए सरकार से अपील की।

बैठक में देवास, शिवपुरी, भिंड, गुना एवं संपूर्ण मध्यप्रदेश के प्रतिनिधि शामिल रहे।

जैन मिलन इंदौर शाखा के मंत्री वीर संजीव जैन संजीवनी ने बताया कि संपूर्ण भारतवर्ष में जैन समाज कर्नाटक में हुए कामकुमार नंदी मुनिराज की हत्या को लेकर निरंतर आंदोलन कर रहा है एवं सरकार को ज्ञापन दे रहे हैं, देवास से पधारे भारतीय जैन मिलन के राष्ट्रीय संयुक्त मंत्री अतिवीर डॉ प्रमोद जैन का कहना है कि हमें अपने जैन होने पर गर्व है और महावीर और गांधी के इस देश में अहिंसक समाजों के ऊपर इस तरह के अत्याचार लोकतंत्र की प्रासंगिकता पर ही प्रश्न खड़ा कर रहा है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे बाल ब्रह्मचारी पंडित रतन लाल शास्त्री ने सरकार को भगवान महावीर के सिद्धांतों को व्यवहार में लाने की सलाह दी।

विदिशा सकल जैन समाज के अध्यक्ष राकेश जैन द्वारा एक नई रूपरेखा बनाकर कार्य करने पर समाज को आह्वान किया।

कार्यक्रम का समापन वीर राजीव जैन निराला अध्यक्ष जैन मिलन शाखा महालक्ष्मी इंदौर एवं प्रदीप जैन शास्त्री के उद्बोधन से हुआ कार्यक्रम का संचालन अर्पित जैन एवं नीरज जैन द्वारा किया गया।

इस अवसर पर भारतीय जैन मिलन की राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य वीर के सी जैन,क्षेत्रीय कार्यकारी अध्यक्ष क्षेत्र क्रमांक 12 वीर एस सी जैन,क्षेत्रीय उपाध्यक्ष वीर कैलाश चन्द्र जैन बाँझल, जैन मिलन देवास के अध्यक्ष वीर मुकेश जैन बाँझल,वरिष्ठ सदस्य वीर आर सी जैन,वीर राकेश जैन देवास,वीर चक्रेश जैन मंत्री शुख शांति नगर शाखा इंदौर, संजय जैन अहिंसा, राजेंद्र जैन टी आई, ब्रह्मचारी दीदी, बड़ी संख्या में गणमान्य महिला-पुरुष मौजूद थे।

बैठक के उपरांत सभा स्थल पर ही इन्दोर शहर की शाखाओं द्वारा राष्ट्रीय अध्यक्ष महोदय का शाल श्री फल एवम स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मान किया गया, साथ ही राष्ट्रीय संयुक्त मंत्री अतिवीर डॉ प्रमोद जैन,वीर राजेश जैन बंटी, सहित भारतीय जैन मिलन के सभी पदाधिकारियो को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया।

वीर विजय कुमार जी ने सम्बोधित करते हुये सभी प्रतिनिधियों को इन्दोर शहर में और नई शाखायें खोले जाने सदस्य सँख्या बढ़ाने के लिये प्रेरित किया।

नवागढ़ अभिलेख एवं पुरातत्व का लोकार्पण

नवागढ़ की पुरा संपदा ऐतिहासिक धरोहर : आचार्य श्रुतसागर महाराज

मयूर विहार दिल्ली में विराजित निर्यापक पट्टाचार्य श्री श्रुतसागर महाराज के मंगल सान्निध्य में प्रागैतिहासिक नवागढ़ क्षेत्र जिला ललितपुर पर केन्द्रित नवागढ़ अभिलेख एवं पुरातत्व शोध ग्रंथ का लोकार्पण मयूर विहार के अध्यक्ष विजय कुमार जैन, महामंत्री अरविंद जैन एवं समस्त पदाधिकारियों के साथ ग्रीन पार्क महिला मंडल की अध्यक्ष सरिता जैन एवं मयूर विहार की महिला अध्यक्ष अंजू जैन, रेनू जैन ने संपादित किया। नवागढ़ क्षेत्र के निर्देशक ब्रह्मचारी जयकुमार निशांत ने यह ग्रंथ आचार्यश्री को भेंट किया। नवागढ़ पर डॉक्टर अर्पिता रंजन दिल्ली ने शोधकार्य किया है।

इस अवसर पर आचार्य श्री श्रुतसागर महाराज ने अपने उदबोधन में बताया ब्र. जय भैया विगत 25 वर्षों से संपर्क में हैं। आपने प्रतिष्ठा कार्य को आगमोक्त विधि से करते हुए विशेष आयाम स्थापित किया है।/मुझे प्रसन्नता है आपने प्रतिष्ठा कार्य के साथ इतिहास पर भी कार्य करना आरंभ किया है। नवागढ़ में प्राप्त शैल चित्र जिनमें जैनदर्शन के गूढ़ रहस्य संकेत रूप में चित्रित हैं ,विशेष हैं इनमें जहां श्रावकों की चर्या, मुनिचर्या को चित्रित किया है वहीं सल्लेखना द्वारा मुक्ति को प्राप्त करने के संकेत भी हैं। नवागढ़ में प्राप्त पुरा संपदा जैन दर्शन, पुरातत्व की ऐतिहासिक धरोहर हैं।

नवागढ़ तीर्थक्षेत्र कमेटी के प्रचारमंत्री डॉ सुनील संचय ने बताया कि डॉक्टर अर्पिता रंजन जो भारतीय पुरातत्व विभाग दिल्ली में सहायक अधीक्षण पुरालेखविद के रूप में कार्यरत हैं,आपने विगत 4 वर्षों में नवागढ़ क्षेत्र के अभिलेखों , प्रतिमाओं, कलाकृतियों एवं परिवेश का अध्ययन करते हुए नवागढ़ से प्राप्त संस्कृत अभिलेख एवं पुरातात्विक साक्ष्यों का समीक्षात्मक अध्ययन विषय पर शोध प्रबंध किया है आपने यह शोध प्रबंध डॉ प्रकाश राय वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय आरा बिहार के निर्देशन में संपादित किया है, आपने इस ग्रंथ में नवागढ़ के सभी साक्ष्यों के आधार पर उसकी ऐतिहासिकता ,सांस्कृतिक एवं धार्मिक विरासत पर वृहद विवेचन करते हुए यह कार्य संपन्न किया है। इस शोध प्रबंध का प्रकाशन पंडित गुलाब चंद्र पुष्प प्रतिष्ठाचार्य स्मृति ट्रस्ट एवं नवागढ़ समिति के द्वारा भारतीय ज्ञानपीठ दिल्ली से किया गया है।

निदेशक ब्र. जय निशांत भैया ने अपने उदबोधन में कहा कि आचार्य महाराज ने अपनी तप शक्ति, इच्छाशक्ति एवं साधना शक्ति के द्वारा ट्यूमर जैसे रोग को दूर किया है। कई माह तक चल नहीं पाने की स्थिति में भी आपने अपने चर्या से कोई समझोता नहीं किया। आज हमें मंत्र शक्ति, भक्ति से साक्षात्कार कराया है। आचार्यश्री के आशीर्वाद से मेरे एवं डॉक्टर बृजेश कुमार रावत लखनऊ के द्वारा जैन दर्शन की प्राचीनता इतिहास एवं पुरातत्व को देश विदेश से प्राप्त साक्ष्यों को एकत्रित करके इन के माध्यम से जैनदर्शन की प्राचीनता सांस्कृतिक विरासत को सभी के समक्ष चित्रावली के माध्यम से प्रस्तुत करना हैं।

समाज अध्यक्ष श्री विजय कुमार जी ने निशांत जी का सम्मान करते हुए कहा इस मंदिर में शून्य से शिखर तक जो भी कार्य हुए हैं जय भैया जी ने हीं कराए हैं। मैं चाहता हूं आपका इसी प्रकार सहयोग सदैव मिलता रहे।

संस्कृति संरक्षण संस्कारों से ही संभव : अर्चना जैन सदस्य नीति आयोग

भारत सरकार की नीति आयोग सदस्य श्रीमती अर्चना जैन (राज्यसभा सदस्य दर्जा प्राप्त), महरौनी विकासखंड में सोजना के पास स्थित प्रागैतिहासिक अतिशय क्षेत्र नवागढ़ में अपने परिवार के साथ उपस्थित हुई,आपने अरनाथ भगवान के दर्शन करके आराधना की। यहां खुदाई में प्राप्त विशेष कलाकृतियों एवं प्रागैतिहासिक साक्ष्यों का अवलोकन किया।

प्रचारमंत्री डॉ सुनील संचय ने बताया कि इस मौके पर श्रीमती अर्चना जैन सदस्य नीति आयोग भारत सरकार ने नवागढ़ तीर्थक्षेत्र के दर्शन, पूजन, अवलोकन किया, गुरुकुल के बच्चों से संवाद किया, बच्चों को भोजन परोसा और उनके मुख्य आतिथ्य में सभा का आयोजन किया गया।आयोजित सभा में आपने कहा कि निश्चित रूप से नवागढ़ एक बहुत बड़ी विरासत रहा है, जहां जैन संतों का आवागम भी होता रहा है। यहां प्राप्त उपाध्याय परमेष्ठी के जिन बिंबों एवं शैलाश्रयों से सिद्ध होता है यहां शिक्षा का विशेष केंद्र रहा होगा।

अपने श्री नवागढ़ गुरुकुलम का गहनता से निरीक्षण करके प्रसन्नता व्यक्त की।अपने उद्बोधन में कहा क्षेत्र के निर्देशक ब्र. जय निशांत भैया जी ने मुझे कई बार आमंत्रित किया पर आना नहीं हो सका।आज यहाँ आकर ऐतिहासिक सांस्कृतिक अमूल्य विरासत को देखकर अत्यधिक प्रसन्नता और गौरव की अनुभूति हो रही है। यहां की विरासत एवं गुरुकुल देख कर लगा जयनिशांत भैया जी पंचकल्याणक महोत्सव से ज्यादा महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं।

आपने कहा आज नवागढ़ आकर इतनी प्रसन्नता हो रही है ,शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकती।

सुनील जैन पति श्रीमती अर्चना जैन ने कहा कि मुझे नहीं लगता था कि नवागढ़ में इतनी विलक्षणता है,मैं हैरान हूं इतने कम समय में सुव्यवस्थित प्रबंधन, संस्थान जय निशांतभैया जी ने खड़ा किया है। मेरा परिवार सहयोग के लिए सदैव तत्पर रहेगा।

इस मौके पर नवागढ़ तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं नवागढ़ गुरूकुलम ने श्रीमती अर्चना जैन सदस्य नीति आयोग भारत सरकार का तिलक, माला, श्रीफल, अंगवस्त्र, स्मृति चिन्ह, साहित्य भेंटकर सम्मानित किया। साथ ही अन्य अतिथियों का स्वागत किया गया। संचालन महामंत्री वीरचन्द्र जैन नेकौरा ने किया। प्रारंभ में नवागढ़ गुरूकुलम के बच्चों ने मंगलाचरण किया। अर्चना जैन एवं अतिथियों ने दीप प्रज्वलित किया।

इस मौके पर सुनील जैन, अतिशय जैन, अनुष्का जैन खुरई, क्षेत्र के महामंत्री वीर चंद नेकौरा, डॉ कोमल चंद्र,संयोजक विमल जैन पठा,एडवोकेट संदीप जैन व नवागढ़ गुरूकुलम के शिक्षक व छात्र आदि प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

परमात्मा से परमात्मा को मांगना ही सच्ची प्रार्थना है

अहिंसा संस्कार पद यात्रा के प्रणेता, साधना महोदधि, उत्कृष्ट सिंह-निष्क्रिडित व्रत करता, अंतर्मना आचार्य प्रसन्न सागर जी महाराज ने धर्म सभा को संबोधित करते हुये कहा कि - प्रार्थना का जीवन में गहरा महत्व है। जीवन में ही नही अपितु हर धर्म में भी प्रार्थना का महत्व है दुनियां में ऐसा कोई धर्म नहीं है जिसमें प्रार्थना न हो और प्रार्थना का महत्व स्वीकृत न हो।

अन्तर्मना ने कहा मंदिरो में दुनियां की दौलता और सुख-सुविधाओं को मांगने वाले को भिखारी से भी गया गुजरा बताया और प्रार्थना करने वाले पुजारी है और कामना करने वाला व्यापार है। धन ओर आरोग्य के लिये ,प्रार्थना करना भक्ति नहीं है यह तो दुकानदारी है। ऐसे दुकानदारों का मंदिर में प्रवेश वर्जित होना चाहिये जो ईश्वर से प्रेम करना चाहते है उन्हें ऐसी - याचनायें शीघ्र, छोड़ देनी चाहिये! परमात्मा से केवल परमात्मा मांगना - सर्वोतम प्रार्थना है ! अन्तर्मना के कहा कि ईश्वर के चरणों में बैठकर -प्रार्थना करो वहीं त्पार्थना करो यही प्रार्थना हो कि मेरे प्रभु! मुझे सदैव अपने चरणों में रखना ! भगवान से उनके श्री चरण की सेवा भक्ति माँगना योंकि दुनियाँ के सारे सुख अनिंद यही मिलते है और प्रभु के चरणो में बैठकर यही प्रार्थना करना ओर कहना कि हे भगवन! तूने जो सुख- नमुद्धि, धन, वैभव दिया है उसमें से कुछ कम करना हो तो कर लेना 'किन मेरे भगवन्! मेरी श्रद्धा कभी कम मत करना मेरी श्रद्धा हमेशा बढ़ाते रहना। प्रभु से भक्ति का दान मांगना ! सत्ता और सत्कार नहीं, अपितु श्रद्धा मांगना।

नरेंद्र अजमेरा पियूष कासलीवाल

राजस्थान में राज्य श्रमण संस्कृति बोर्ड का गठन हुआ

जैन समाज ने जताया मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत का आभार

कुछ माहों से देश-प्रदेश में जैन धर्म, समाज, संस्कृति, संत और पुरातात्विक महत्व के प्राचीन जैन तीर्थों पर हो रहे आक्रमण/अतिक्रमण से समग्र जैन समाज चिंतित है। समाज एवं संत समुदाय की मांग पर राजस्थान में जैन श्रमण संस्कृति बोर्ड का गठन किया गया है। समाज ने मांग की कि अब अन्य सभी राज्यों में जैन धर्म, तीर्थ और संतों के प्रति सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए जैन श्रमण संस्कृति बोर्ड का गठन किया जाए। जैन समाज द्वारा मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान से भी कई बार इस संबंध में मांग की गई है अब पूरे समाज को उनसे उम्मीद है कि मध्यप्रदेश में भी जैन श्रमण संस्कृति बोर्ड का जल्द ही गठन किया जाएगा।

राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने जैन समाज, संतों की मांग एवं भावनाओं का सम्मान करते हुए सर्वप्रथम राजस्थान में जैन समुदाय के मंदिर, पुरातात्विक धरोहरों के संरक्षण, जैन साहित्य के संकलन, प्रकाशन एवं शोध, अहिंसा के प्रचार-प्रसार और जैन संतों, साध्वियों, आचार्यों के विहार (भ्रमण) के दौरान सुरक्षा सुनिश्चित करने एवं बोर्ड को सुझाव देने हेतु बोर्ड के गठन के घोषणा की गई है। यह बोर्ड समय-समय पर राज्य सरकार को इस संबंध में सुझाव देगा।

राजस्थान सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग ने राजस्थान राज्य श्रमण संस्कृति बोर्ड के गठन की अधिसूचना जारी करते हुए लिखा है कि - राज्य सरकार द्वारा जैन समुदाय के मंदिर, पुरातात्विक धरोहरों के संरक्षणं एवं नव निर्माण, जैन समुदाय के लोक साहित्य एवं ग्रंथों के प्रकाशन, प्रचार- प्रसार, इनके प्राचीन साहित्यों के संकलन, शोध एवं संरक्षण तथा जैन धर्म श्रमण परंम्पराओं के सरक्षण के सम्बन्ध में सुझाव देने हेतु राज्य श्रमण संस्कृति बोर्ड का गठन किया जाता है।

इसके सात बिन्दुओं में उद्देश्य इस प्रकार हैं-

1. जैन धर्म श्रमण परम्पराओं के संबंध में राज्य सरकार को सुझाव देना।
2. जैन समुदाय के लोगों के कल्याण हेतु इस समाज के लिये विभिन्न योजनायें प्रस्तावित करने एवं उनके प्रचार प्रसार के संबंध में राज्य सरकार को सुझाव देना।
3. जैन समुदाय पर आधारित पुरातात्विक धरोहरों एवं मंदिरों का संरक्षण एवं नव निर्माण के संबध में राज्य सरकार को सुझाव देना।
4. जैन समुदाय के प्राचीन साहित्य का संकलन, संरक्षण एवं शोध कार्य पर राज्य सरकार को सुझाव देना।
5. जैन समुदाय के आराध्य 24 तीर्थंकरों पर रचे गये लोक साहित्य का प्रकाशन व प्रचार प्रसार करना।
6. जैन समुदाय के आराध्य भगवान महावीर के शांति एवं अंहिसा के सिद्धातों का प्रचार प्रसार करना।
7. जैन समुदाय के आचार्य-संतों एवं साध्वियों और श्रावक-श्राविकाओं को भ्रमण के दौरान कानूनी संरक्षण प्रदान करने का सुझाव राज्य सरकार को देना।

उप निदेशक स्तर का विभागीय अधिकारी (समाज कल्याण सेवा संवर्ग सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग), बोर्ड के सचिव के पद का कार्य करेंगे। उक्त बोर्ड के कार्य संचालन के लिए अलग से नवीन पदों का सृजन कर स्वीकृत किये जायेंगे।

ग. सेवा शर्तें-

राजस्थान राज्य श्रमण संस्कृति बोर्ड की सेवा शर्तें इस बोर्ड के लिये निर्मित नियमों के अनुसार होगी।

छ. मार्गदर्शन की कार्य पद्धति-

सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग, राजस्थान सरकार, राजस्थान राज्य श्रमण संस्कृति बोर्ड के लिये प्रशासनिक विभाग होगा।

ङ. कार्यक्षेत्र

राजस्थान राज्य श्रमण संस्कृति बोर्ड का कार्यक्षेत्र सम्पूर्ण राजस्थान राज्य होगा। तथा इस बोर्ड के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए राज्य सरकार को कार्य योजना एवं सुझाव प्रस्तावित करेगा।

छ. राजस्थान राज्य श्रमण संस्कृति बोर्ड के अध्यक्ष एवं सदस्यों की योग्यता, वेतन भत्ते, कार्यकाल तथा अन्य सुविधाओं के सम्बन्ध में राज्य सरकार जो भी निर्धारित करेगी, देय होंगे।

लंबे समय से जैन समाज की यह मांग थी। मुख्यमंत्री अशोक जी गहलोत की इस महत्त्वपूर्ण घोषणा पर जैन समाज में हर्ष है तथा जैन समाज ने इसके लिए मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत का आभार जताया है।

देवगिरी कॉलेज रोड आर्यनंदी कॉलोनी, वेदांत नगर परिसर में "परमपूज्य अंर्तमना तपस्वी सम्राट आचार्य प्रसन्नसागरजी महाराजजी" के 54 वें जन्मदिन निमित्त वृक्षारोपण कार्य श्री कमलजी पहाड़े के नैतृत्व मे संजय पापडीवाल, सौ. जमुनाजी मानधने के करकमलो द्वारा एवं JESA Family सुनीलजी सेठी, सौ.बड़जातेजी , पंढ़रीनाथ कदम आदि के सभी सदस्य के साथ में किया गया।

हसमुख गांधी अल्पसंख्यक आयोग की सलाहकार पेनल में भारत सरकार द्वारा मनोनीत हुए

जैन समाज के कर्मठ, सहज, सरल व्यक्तित्व के धनी वरिष्ठ समाजसेवी श्री हसमुख जैन गांधी इन्दौर को भारत सरकार के अल्पसंख्यक आयोग में सलाह देने हेतु सामुदायिक (कम्यूनिटी) नेताओं की पेनल में सम्मिलित किया गया है। भारत सरकार के राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग ने एक पत्र जारी कर श्री हसमुख जैन गांधी को इस आशय का पत्र जारी कर नियुक्ति प्रदान की है।

उल्लेखनीय है कि श्री गांधी, विगत चार दशकों से समाजसेवा के कार्यों में संलग्न होकर अपने व्यापार व्यवसाय को शिखर पर पहुंचाने के साथ अनेकों संस्थाओं में अपनी ऊर्जावान सेवाएं प्रदान कर रहे है। जैन युवा रत्न, उद्योगरत्न, भूमि निर्माण अवार्ड जैसी अनेकों उपाधियों से सम्मानित आपको देश के सभी आचार्यों-मुनिराजों ,आर्यिका माताजी, भट्टारक स्वामीजी का आशीर्वाद प्राप्त है। जैन जगत के सबसे बड़े आयोजन गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली स्वामी महामस्तकाभिषेक में 1992, 2006, 2018 में आपने अनेको जिम्मेदार पदों पर कार्य किया । साथ ही बावनगजा महामस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, हस्तिनापुर महोत्सव, मांगीतुंगी महामस्तकाभिषेक, जहाजपुर अतिशय क्षेत्र, पावागिरि ऊन सहित अनेक तीर्थों में आप सक्रिय पदाधिकारी होकर विकास कार्यों के प्रमुख सलाहकार भी है।

व्यावसायिक क्षेत्र में कोल्ड चेन इण्डस्ट्री एशोसिएशन के अध्यक्ष, इन्दौर जिला उर्वरक संघ अध्यक्ष, फेडरेशन ऑफ कोल्ड स्टोरेज एसोशिएशन ऑफ इंडिया के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष पद पर कार्य कर गांधी फर्टिलाइजर्स, गांधी कोल्ड स्टोरेज, इन्दौर फर्टिलाइजर्स का कुशल संचालन कर रहे हैं।

दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप फेडरेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष (2017-18), शाश्वत तीर्थ क्षेत्र कमेटी सम्मेदशिखर जी में आप राष्ट्रीय पदाधिकारी है। इन्दौर दिगम्बर जैन समाज द्वारा एक वर्ष में आयोजित पांच से अधिक पंच कल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के अध्यक्ष के रूप में आपने अनेकों सफल आयोजन संपन्न किए हैं।

जैन तीर्थों के विकास की दृष्टि से दिगंबर जैन तीर्थ निर्देशिका के 11 संस्करणों के माध्यम से 10000 प्रतियों का प्रकाशन आपकी उपलब्धि है। शीघ्र ही 12 वर्ष संस्करण प्रकाशित कर प्रकाशित कृतियों की संख्या एक लाख तक पहुंचने का लक्ष्य है। डॉ. अनुपम जैन के प्रधान संपादकत्व में प्रकाशित इस कृति का अंग्रेजी अनुवाद भी हो चुका है।

अनेको सम्मान के साथ कुशल वक्ता, कुशल संयोजक, जैन एकता के पक्षधर, पंथवाद - संतवाद - ग्रंथवाद से परे रहकर जिनागम की सेवा में हमेशा तत्पर रहने वाले श्री हसमुख जैन गांधी की इस उपलब्धि पर अनेक स्नेहीजनों ने उन्हें हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं दी है।

श्री १००८ दिगम्बर जैन अतिशय तीर्थक्षेत्र, जवास, खैरवाड़ा, उदयपुर (राजस्थान)

Front view of the temple

View of wide hall with pillars before entering the main temple.

Profile view of the temple

Jain ruins recovered near the school premises in the village.

आज की भाववन्दना में हम जानते हैं, एक ऐसे प्राचीन जैन मन्दिर के बारे में जिसके आसपास कभी 2500 जैन परिवार निवास करते थे, किंतु आज यहां कोई नही रहता।

उदयपुर से मात्र 71 किमी दूर इस विशाल व अतिशयकारी जिन मन्दिर को जीर्णोद्धार कराया जाना बहुत आवश्यक है।

इस मंदिर के 25 किमी के दायरे में 14 से अधिक जैन मंदिर है, जिनके की आप दर्शन कर सकते हैं। इसमे प्रसिद्ध तीर्थ केसरिया जी मात्र 13 किमी दूरी पर स्थित है

आइये अधिक जानते हैं, इस क्षेत्र के बारे में।

श्री १००८ दिगम्बर जैन अतिशय तीर्थक्षेत्र, जवास, खैरवाड़ा, उदयपुर (राजस्थान)

यहाँ पर्वत की तलहटी में एक बहुत प्राचीन व विशाल मन्दिर है। मन्दिर में भगवान आदिनाथ जी की श्वेत वर्ण में पद्मासन प्रतिमा जी विराजमान है। यहां खुदाई में अनेक बहुत सुन्दर प्रतिमाएं निकली हुई है, इस मंदिर की भव्यता को देखकर कभी यहाँ की समृद्धशाली समाज का अनुमान लगाया जा सकता है। एक बार एक स्कूल की नींव खुदाई में यहां जैन तीर्थंकर भगवान की कई प्राचीन प्रतिमाएं प्राप्त हुई।

यह स्थान जवास एक पर्वतीय क्षेत्र है, जहां पर 1 मन्दिर बना हुआ है, आस-पास कमरे एवं दहलान है।

इस क्षेत्र पर रुकने और भोजन की व्यवस्था नही है।

समीपवर्ती तीर्थक्षेत्र : इस मंदिर के 25 किमी के दायरे में 14 से अधिक जैन मंदिर है, जो कि अधिक प्रचलन में नही है, यात्रियों की कमी है, कोई नही पहुँचता,,, अजैन आबादी व जैन समाज की अनभिज्ञता वश अब यह सभी धरोधरें संकट में है।

आवागमन के साधन

निकटतम प्रमुख नगर - खैरवाडा 7 किमी

अखिल भारतीय दिगम्बर जैन युवा परिषद के सदस्यों द्वारा यहां देखरेख का कार्य प्रारंभ किया गया है, जीर्णोद्धार व अभिषेक, पूजन व प्राचीन धरोहर को सुरक्षित कराने में आपका योगदान सदैव इस क्षेत्र पर बना रहेगा, ऐसी मंगल भावना करते हैं, आपके द्वारा, ऐसे उत्तम व उत्कृष्ट कार्य के लिए हम सब बहुत अनुमोदना करते हैं।

सभी से विशेष निवेदन है, इस पावन अतिशय तीर्थक्षेत्र के दर्शन अवश्य करें।

नमनकर्ता : सुलभ जैन (वाह)

जिला मैनपुरी में स्थित कस्बा करहल, उत्तर प्रदेश के जैन जिनालय

आज की भाववन्दना में हम चलते हैं, बाइसवें तीर्थंकर श्री नेमिनाथ भगवान की जन्मस्थली शौरीपुर से महज 53 किमी दूर, जिला मैनपुरी में स्थित कस्बा करहल, जहाँ पर स्थित भव्य व प्राचीन मन्दिर सहज ही किसी साधर्मी का मन मोह लेते हैं।

राष्ट्रीय राजमार्ग 83 पर, इटावा से 29 किमी व मैनपुरी से 27 किमी पर स्थित, यह नगर सात भव्य जिनालयों से सुशोभित है, यहां पर जैन समाज के लगभग 400 परिवार है, व जैन धर्म के यशगान को देश-विदेश तक पहुँचाने वाले कई जैन विद्वानों की यह जन्मभूमि रही हैं, इस समाज का आपसी तालमेल व वात्सल्यता पूरे देश मे एक अलग मिसाल के तौर पर देखी जाती है।

यहां के मंदिरों की एक अनोखी व्यवस्था है, जो देश मे सामान्यतः कहीं भी नही पाई जाती, वह है - मंदिरों की नाम व्यवस्था,, यह बहुत अलग भी हैं, और जब हम इन अतिसुन्दर जिनालयों के नाम सुनते हैं, तो एक अलग सी मुस्कान चेहरे पर आ ही जाती है। मुझे गत वर्ष, मूलनिवासी श्री अमित जैन शास्त्री जी के सानिध्य में इन सभी मंदिरों के दर्शन प्राप्त हुए थे।

तो आइये यहां के सातों जिनमंदिर का संक्षेप इतिहास जानते हैं।

प्रथम जिनालय - श्री १००८ भगवान पार्श्वनाथ जैन मंदिर, जिसे यहां **बड़े जैन मंदिर** के नाम से भी जाना जाता है। इस मंदिर में अति सुंदर तीन वेदियां बनी है, यह मंदिर लगभग 1000 वर्ष प्राचीन है।

द्वितीय जिनालय - श्री १००८ भगवान चन्द्रप्रभ जिन मंदिर, इस मंदिर को यहां **"मंदिर सिंघईयान"** के नाम से जाना जाता है। इस मंदिर में 5 भव्य वेदी बनी हुई हैं, यह मंदिर लगभग 700 वर्ष से भी अधिक प्राचीन है।

तृतीय जिनालय - श्री १००८ भगवान आदिनाथ जिन मंदिर, इस मंदिर को यहां **"मंदिर रपरियान"** के नाम से संबोधित किया जाता है। इस मंदिर में तीन वेदियां बनी हुई है, यह मंदिर 450 वर्ष प्राचीन है। इस मंदिर में अष्टधातु की भगवान पार्श्वनाथ जी की अति मनोरम प्रतिमा जी निकट के दिहुली के प्राचीन मंदिर से पुनर्स्थापित की गई है, जो कि करहल से 15 किमी है। इसी प्रकार की एक प्रतिमा जी चंदेरी के मंदिर में भी स्थित है, जिसके दर्शन का सौभाग्य हमें हाल ही की बुंदेलखंड यात्रा में प्राप्त हुआ0।

चतुर्थ जिनालय - श्री १००८ भगवान नेमिनाथ जिनालय, इस मंदिर को यहां **"मंदिर हलवाईयान"** के नाम से जाना जाता है, इस मंदिर में तीन भव्य वेदियां हैं, यह मंदिर लगभग 300 वर्ष प्राचीन है।

पंचम जिनालय - **श्री १००८ पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन भवन, नशियाँ जी** लगभग 38 वर्ष बने इस जिनालय में अतिसुन्दर मानस्तम्भ व तीन वेदियां बनी हुई हैं। 03 अक्टूबर 2019 को नशियाँ जी के पास स्थित एक मकान की खुदाई से भगवान श्री महावीर स्वामी जी की एक गेरूए रंग की प्रतिमा जी प्राप्त हुई। (संलग्न फ़ोटो)

छटवां जिनालय - **श्री १००८ भगवान महावीर जिनालय**, यह मंदिर नवीन निर्माण हुआ है, यद्धपि पहले इस स्थान पर 200 वर्ष प्राचीन एक चैत्यालय था। इसे श्रीमति दुर्गा जी जैन द्वारा बनवाया गया था।

सातवाँ जिनालय - लाला रिखबदास जी रईस साहब द्वारा बनवाया गया चैत्यालय, जो कि अब सकल जैन समाज को समर्पित है, ऐसे महान पुण्यशाली जीवो की बहुत अनुमोदना करते हैं, जिन्होंने इतने सुंदर मंदिर बनवाये और हजारों साल के लिए जिनेन्द्र भगवान की प्रतिमा दर्शन में प्रतिदिन निमित्त कारण बने।

करहल में, यह सभी मंदिर बिल्कुल पास पास बने हुए हैं, जिनके की आप दर्शन कर सकते हैं।

आवागमन के साधन

यह नगर सड़क मार्ग द्वारा देश के बाकी हिस्सों से अच्छी तरह जुड़ा हुआ है, आगरा लखनऊ एक्सप्रेस-वे करहल से होकर गुजरता है और यहाँ इस एक्सप्रेस-वे का कट है।

इटावा से कुरावली फोरलेंन भी करहल को इटावा व जनपद मैनपुरी से जोड़ता है, करहल नगर मैनपुरी आगरा वाया इटावा रेल लाइन से जुड़ा हुआ है तथा शहर मे एक रेलवे स्टेशन भी है।

एक बार यहां के इन भव्य जिनालयों के दर्शन अवश्य करें।

- सुलभ जैन (बाह)

करहल मैनपुरी से प्राप्त पुरावशेष व जिनबिम्ब

धारापत के जैन मंदिर

बांकुरा जिला कभी जैन धर्म के प्रभाव में था और जिले में कई जैन अवशेष बिखरे हुए थे। धारापत वह स्थान है, जहां अनेक जैन अवशेष मिल सकते हैं। जैन अवशेष सोनातपाल, बहुलारा, धारापत, हरमसरा गांवों में भी देखे जाते हैं और भगवान पारसनाथ (अंबिकनगर के पास) को अब हिंदू अवशेष के रूप में लिया जाता है और कुछ अक्षुण्ण छवियों को हिंदू देवताओं के रूप में दैनिक पूजा की जाती है।

धारापत के मंदिर

धारापत और बहुलारा गांवों के मंदिरों में नग्न जैन प्रतिमाएं हैं, जिन्हें " नंगटा ठाकुर" के नाम से जाना जाता है। यह भगवान पारसनाथ की एक मूर्ति है जिसे सावधानीपूर्वक दो हाथों को जोड़कर भगवान विष्णु की मूर्ति में परिवर्तित किया गया है। यह स्पष्ट रूप से क्षेत्र में जैन धर्म के पतन के बाद अत्यधिक शक्तिशाली हिंदू प्रभाव का प्रतीक है।

विरासत का ज्ञान : दिलाता है पहचान-प्रो. मिश्र

'जो कुछ हमें अपने पूर्वजों से पीढ़ी दर पीढ़ी प्राप्त हुआ है। वही विरासत है। जो हमें भावनात्मक शक्ति प्रदान करती है। विरासत में भाषा है, साहित्य है, धर्म है, पर्व है, तीर्थ है और समन्वय है, जिससे हमें समकालीन सामाजिक वातावरण से तादात्मय स्थापित करने का गुण प्राप्त होता है।' उक्त विचार देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर के प्रबन्ध अध्ययन संस्थान के पूर्व निदेशक प्रो. प्रभुनारायण मिश्र ने जैन धर्म अध्ययन पीठ, डॉ. बी.आर. अम्बेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय, महू में व्यक्त किये। पीठ द्वारा बुद्ध विहार (आडिटोरियम) महू में ८ अगस्त २३ को आयोजित विशेष व्याख्यान के अन्तर्गत प्रो. मिश्र ने कहा कि दुनिया की समस्याओं के मूल में दो कारण है–

१. वैश्विक स्तर पर निजी रिश्तों में करुणा का अभाव।

२. दूसरे के दृष्टिकोण को नजरअंदाज करना।

जैन धर्म की अहिंसा सार्वभौमिक है जो कृत, कारित, अनुमोदित है। वह कायिक, वाचिक और मानसिक है। अहिंसा की व्याख्या में झुकने की बात नहीं है। जैन धर्म की अहिंसा अत्यन्त तर्क एवं युक्तिसंगत तथा वैज्ञानिक है। श्रमण संस्कृति के ज्ञान के बिना भारतीय संस्कृति का ज्ञान अधूरा है। कार्यक्रम में विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित भेरूलाल पाटीदार शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, महू की पूर्व प्राचार्य तथा प्राकृत की निष्णात विद्वान प्रो. शोभा जैन ने जैन विरासत पाठ्यक्रम के अन्तर्गत प्राकृत भाषा एवं साहित्य प्रश्नपत्र की विषयवस्तु को समझाया। आपने प्राकृत भाषा की महत्ता और साहित्य की समृद्धता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यदि हमें जैन संस्कृति का गहन अध्ययन करना है तो प्राकृत भाषा और साहित्य का अध्ययन करना ही होगा।

दि. जैन धर्मस्थल शीतलतीर्थ रतलाम से पधारी क्षेत्र की अधिष्ठात्री डॉ. सविता जैन ने कहा कि ऐसे पाठ्यक्रमों के माध्यम से हम अपनी सांस्कृतिक विरासत को आगे बढ़ाते हैं। हम किसी भी धर्म के मानने वाले हो किन्तु हमें अपने अपने धर्म की सच्चाई को जानना बहुत जरूरी है क्योंकि:–

यही धर्म का मूल है, यही धर्म का सार है।
यही धर्म की एकता, यही धर्म का प्यार।।

विश्वविद्यालय की जैन धर्म अध्ययनपीठ के मानद आचार्य तथा जैन धर्म के विख्यात विद्वान डॉ. अनुपम जैन ने पीठ की स्थापना से लेकर अब तक की गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यहाँ मेरी दोहरी जिम्मेदारी है मैं इस पीठ का चेयर प्रोफेसर हूँ तो श्रमण संस्कृति विद्यावर्द्धन ट्रस्ट का ट्रस्टी भी हूँ। जैन विरासत पाठ्यक्रम दोनों की भागीदारी से चल रहा है। आपने प्रसन्नतापूर्वक बताया कि विश्वविद्यालय की तत्कालीन कुलपति प्रो. आशा शुक्ल ने २०२१ में पीठ की स्थापना की थी। संस्कृति और संस्कार पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन भी दिसम्बर २१ में गोम्मटगिरि तीर्थ पर आपके कार्यकाल में किया गया। २०२२ में तत्कालीन कुलपति प्रो. डी.के. शर्मा इस पीठ के क्षेत्र का विस्तार करते हुए जैन धर्म अध्ययन पीठ नामकरण किया गया जिसके तहत यह जैन विरासत पाठ्यक्रम चल रहा है। साथ ही गत संगोष्ठी की आख्या का सम्पादन एवं प्रकाशन भी किया। वर्तमान कुलपति प्रो. आर.जी. आत्राम के मार्गदर्शन में यह पाठ्यक्रम अब पूर्णता को

प्राप्त हो रहा है। आगामी १९–२० अगस्त २३ को परीक्षायें भी सम्पन्न हो जायेगी। सभी कुलपतियों के द्वारा इस पीठ को दिया गया समर्थन एवं संरक्षण ही इसकी उपयोगिता और प्रासंगिकता को व्यक्त करता है।

समागत अतिथियों के द्वारा व्याख्यान का दीप प्रज्जवलन करने से पूर्व श्रीमती उषा पाटनी द्वारा मंगलाचरण किया गया। डॉ. अनुपम जैन ने स्वागत भाषण दिया तथा अतिथि परिचय श्री जैनेश झांझरी ने दिया। इस अवसर पर पाठ्यक्रम की पाठ्यसामग्री को समाहित करने वाली पुस्तक जैन विरासत तथा वयोवृद्ध विद्वान डॉ. सूरजमल बोबरा द्वारा लिखित अनमोल पदचिन्ह पुस्तक का विमोचन प्रभारी कुलपति डॉ. मनीषा सक्सेना एवं ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री भानुकुमार जी जैन द्वारा किया गया।

प्रभारी कुलपति प्रो. मनीषा सक्सेना ने आगामी पाठ्यक्रमों में जैन आहार को सम्मिलित करने पर जोर दिया क्योंकि कोरोना महामारी के समय में इस आहार पद्धति एवं जैन जीवनशैली ने अपनी उपयोगिता सिद्ध कर दी है। कुलपति महोदया ने प्रो. अनुपम जैन के प्रयासों एवं कर्मठता की प्रशंसा करते हुए कहा कि पीठ की स्थापना सर्व धर्म सम्भाव की भावना से की गई है और अब तक की गतिविधियों से सौहार्द्र विकसित करने में हमें सफलता मिली है। इस दिशा में किये जा रहे पीठ एवं प्रो. जैन के प्रयासों की आपने प्रशंसा की। अतिथियों का सम्मान दि. जैन महिला संगठन की पदाधिकारियों द्वारा तुलसी के पौधे समर्पित कर किया गया। इस अवसर पर जैन समाज के प्रमुख उद्योगपति श्री राजेन्द्र जैन (आई.टी.एल.), श्री अभिषेक झांझरी, महू समाज के अध्यक्ष विमल जी टोंग्या, श्री सुनिल जी कासलीवाल, श्रीमती शाह, श्रीमती सुमन जैन, श्री रवि गंगवाल, आदि की उपस्थिति उल्लेखनीय रही। आभार प्रदर्शन ट्रस्ट के सचिव इंजी श्री कैलाश वैद ने किया तथा संचालन राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त डॉ. संगीता विनायका ने किया।

कार्यक्रम के पश्चात विश्वविद्यालय के प्रशासनिक भवन में जैन धर्म अध्ययन पीठ के कार्यालय का उद्घाटन माननीय प्रभारी कुलपति महोदया द्वारा किया गया। कार्यक्रम अत्यन्त सफल अनुशासित रहा। जिसकी सभी ने भूरि–भूरि प्रशंसा की।

श्रीमती उषा पाटनी, इन्दौर

भेद-विज्ञान की जागरूकता से ही मोह रुपी बंधन टूटता है - आचार्य अतिवीर मुनि

प्रशममूर्ति आचार्य श्री १०८ शान्तिसागर जी महाराज (छाणी) परम्परा के प्रमुख संत परम पूज्य आचार्य श्री १०८ अतिवीर जी मुनिराज के परम पावन सान्निध्य में अतिशय क्षेत्र लाल मन्दिर में मंगल चातुर्मास के अंतर्गत धर्मप्रभावना व ज्ञानगंगा का निरंतर प्रवाह चल रहा है। इस अवसर पर राजधानी दिल्ली के प्राचीन जिनालय श्री दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर, कूंचा सेठ, चांदनी चौक में नवनिर्मित हीं वेदी में विराजमान भव्य रत्नमयी चौबीसी के आकर्षक भामण्डल दिनांक 30 जुलाई 2023 को विधि विधान पूर्वक स्थापित किए गए।

सर्वप्रथम पूज्य आचार्य श्री के मुखारविंद से मंत्रोच्चार के साथ चौबीस जिनबिम्ब का मंगल अभिषेक व वृहद शान्तिधारा संपन्न हुई। तत्पश्चात उपस्थित जनसमुदाय ने शाश्वत तीर्थ श्री सम्मेद शिखर जी की भाव-वंदना करते हुए 24 अर्घ्य समर्पित किए। धर्मसभा को संबोधित करते हुए आचार्य श्री ने कहा कि प्रत्येक जीव का एकमात्र लक्ष्य केवल आत्मकल्याण होना चाहिए। साधनों से निकलकर जीव को तप-साधना में निरंतर अग्रसित होते हुए कर्मों की निर्जरा करनी चाहिए।

आचार्य श्री ने आगे कहा कि जिनालय सम्यक दर्शन की प्राप्ति हेतु प्रमुख केन्द्र है। जिनदर्शन से निजदर्शन की यात्रा ही मोक्ष मार्ग की ओर अग्रसर करती है। भेद-विज्ञान की जागरूकता से ही मोह रुपी बंधन टूट सकता है तथा परम पद की प्राप्ति संभव हो सकती है। प्रत्येक धार्मिक क्रिया या व्रत-उपवास, पूजन, विधान आदि मोक्ष मार्ग में तभी सहायक होंगे जब जीव सम्यक दर्शन रुपी रथ पर आरूढ़ होगा अन्यथा यह सब केवल पुण्यबन्ध में ही कार्यकारी होंगी।

उल्लेखनीय है कि पूज्य आचार्य श्री के पावन सान्निध्य में श्री दिगम्बर जैन नया मन्दिर, धर्मपुरा में भगवान बाहुबली महामस्तकाभिषेक का मंगल आयोजन रविवार, दिनांक 6 अगस्त को किया जा रहा है जिसमें भारी संख्या में श्रद्धालुजन सम्मिलित होकर धर्मलाभ प्राप्त करेंगे।

श्री महावीरजी के मंत्री महेंद्र कुमार पाटनी का निधन

दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी के मानद् मंत्री और दिगम्बर जैन मंदिर महासंघ के अध्यक्ष श्री महेंद्र कुमार पाटनी का स्वर्गवास सोमवार दिनांक ७ अगस्त रात्रि को हो गया है। आपका श्री महावीर जी क्षेत्र के विकास में विशेष योगदान रहा है।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार दिवंगत आत्मा के प्रति अपनी भावभीनी श्रद्धांजली अर्पित करता है।

भव्यछपक आसन्न सागर (श्री गुलाबचंद जी पटना वाले) की समाधि

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की शिष्या आर्यिका श्री दृढमतिमाताजी, ब्रह्मचारिणी सविता दीदी, ब्रह्मचारिणी अनीता दीदी के गृहस्थ जीवन के पिता ९४ वर्षीय श्री गुलाबचंद जैन पटना वालों की समाधि दसवीं प्रतिमाधारी भव्यक्षपक आसन्न सागर जी के रूप में मुनि श्री अजित सागर जी महाराज ससंघ के सानिध्य में संत भवन, भाग्योदय में पूर्ण हुई। आपको २६ दिन तक की सल्लेखना अवधि में संघ का अभूतपूर्व संबोधन प्राप्त हुआ।

वर्णी जी के सानिध्य में आप सामाजिक कार्यों में जुड़े। सन १९७८ में आचार्य श्री के आशीष से प्रारम्भ हुई प्रथम – ब्राह्मी विद्या आश्रम सागर के भवन निर्माण में आपका सराहनीय सहयोग रहा। आप श्री दिगम्बर जैन उदासीन आश्रम ट्रस्ट सागर के पूर्व अध्यक्ष एवं अनेकों संस्थाओं में श्रेष्ठ पदों पर सुशोभित रहे हैं।

- डॉ. पी.सी. जैन

तीर्थ, मंदिर, मूर्ति हमारी संस्कृति की अमूल्य धरोहर, इनके संरक्षण के लिए आगे आएं : उपाध्याय श्री विरंजनसागर महाराज

शाहगढ़ में बुंदेलखंड तीर्थक्षेत्र, मंदिर कमेटियों का अधिवेशन हुआ संपन्न

शाहगढ़। मंदिरों का संरक्षण ही संस्कृति का संरक्षण है, इस महत्वपूर्ण विषय को लेकर बुंदेलखंड तीर्थ क्षेत्र कमेटी एवं मंदिर कमेटियों का अधिवेशन शाहगढ़ के बड़ा मंदिर परिसर में संपन्न हुआ, अधिवेशन में सान्निध्य प्रदान कर रहे जनसंत, उपाध्याय श्री विरंजन सागर महाराज जी ने कहा कि जब समाज आगे नहीं आती तो गुरुओं को इस विषय को लेकर आना पड़ा, मंदिर, तीर्थ हमारी आस्था विश्वास के केंद्र हैं इनका संरक्षण बहुत जरूरी है, जब-जब हमारी संस्कृति पर कुठाराघात हुआ तो साधु संत ही उसे बचबे आगे आए हैं, जनसंत ने कहा कि औरंगजेब ने मंदिर तोड़े तो भक्त लोग तुरंत आगे आए और मंदिर तैयार कर दिए, यही वजह है कि भूगर्भ में हजारों साल पुरानी प्रतिमाओं सहित मंदिर खुदाई में निरंतर मिल रहे हैं , वर्तमान में प्राचीनता को खत्म करके नई प्रतिमाओं को रखना शुरू कर दिया है, प्राचीन मंदिरों में सोने चांदी का नहीं वीतरागता का काम होता था, जनसंत ने कहा कि वर्तमान सोने चांदी की प्रतिमाएं मंदिर बना दिए तो चोरियां तो होगी ही, सुरक्षा के लिए मंदिर की कमेटियों का ही अधिकार समझ लिया और बाहर के उपकार करना बंद कर दिए, मंदिर में बड़ी प्रतिमा होगी तो कभी चोरी नहीं हो सकती, पहले स्कूल, औषधालय खोलकर उपकार किए जाते थे।

आज संस्कृति का पलायन नहीं रुका तो बहुत बड़ी समस्या आ जायेगी। जनसंत ने कहा कि मंदिरों का संरक्षण मात्र सीसीटीवी कैमरे, चौकीदार रखने से नहीं होगा, हमें दिखावा कम करना होगा, हर क्षेत्र में एक उपकार का केंद्र अवश्य खोलें, शाहगढ़ में सात मंदिर हैं लेकिन स्कूल, औषधालय और धर्मशाला तक नहीं है ,जब गांव के लोगों का उपकार होगा

तो वह समाज का उपकार कार्य करेंगे, तीर्थ क्षेत्र मंदिरों का संरक्षण करने के लिए पहले उपकार केंद्र स्थापित करना होगा ,मंदिरों में सोने चांदी का प्रदर्शन कम करें मंदिर में वीतरागता को बनाएं,तो चोरी होने का डर नहीं रहेगा।

तीर्थ,मंदिर हमारी संस्कृति की धरोहर हैं, बड़ी कमेटियां गांव के छोटे मंदिरों का संरक्षण करें सहयोग करें, पांच लोगों की कमेटियां गठित भी करें , आपस की वेमानस्यता ही स्वयं का घात कर रही है, साधुओं में भेदभाव नहीं करें उनके आहार , विहार, और विश्राम की व्यवस्था करें, पंथवाद,संतवाद ,जातिवाद को छोड़ने का संकल्प करें।

अधिवेशन में तीर्थों और मंदिरों के सैकड़ों पदाधिकारी , सदस्य उपस्थित रहे। अधिवेशन में मुख्य वक्ता के रूप में नवागढ़ तीर्थक्षेत्र के निदेशक बाल ब्रह्मचारी प्रतिष्ठाचार्य जय निशांत जी ने कहा कि समस्या हमारी और समाधान हमारा है, हमें अपने क्षेत्र का संरक्षण स्वयं को करना होगा, एकल परिवार और गांव से शहर की ओर पलायन करना भी मंदिरों के संरक्षण में हमारी कमी बनती जा रही है, साधुओं के विहार में श्रावकों का नहीं होना ही घटनाओं को बढ़ावा देना है, टैक्स देते हैं लेकिन राजनीति में प्रतिनिधित्व की कमी आ गई है, खुद को जैन लिखना शुरू करें और बच्चों को कान्वेंट स्कूल में नहीं संस्कृति युक्त स्कूल में पढ़ाई करावे तभी तो संस्कार बच्चों में आएंगे। वक्ता के रूप में इंद्र कुमार, अशोक कुमार ,विनोद ,अशोक पड़वा, वीर चंद नेकौरा, डॉ राकेश मडावरा, कमल डेवडिया ने भी अपने विचार रखे। मंगलाचरण अजय जैन ने किया ।पाद प्रक्षालन और शास्त्र भेंट संजय, अजय, राजेश कुबेर परिवार पथरिया, विरागोदय तीर्थ कमेटी पथरिया, सनत कुटोरा, प्रतिभा बड़ागांव, वीरेंद्र निमानी, कपूर चंद गौना, हुकमचंद, देवेंद्र घुवारा, राजश्री पात्र हाउस, पंकज बक्सवाहा को सौभाग्य मिला। तीर्थ क्षेत्र नैनागिर, सादपुर, शाहगढ़ में होने वाले पंच कल्याणक महोत्सव में मंगल सानिध्य हेतु सभी कमेटियों ने श्रीफल भेंट कर आशीर्वाद लिया, वही बुंदेलखंड क्षेत्र की सभी कमेटियों के पदाधिकारी द्वारा मंदिरों का संरक्षण करने और साधु-संतों की व्यवस्थाओं में अपनी सहभागिता रखने का संकल्प लिया। आभार चातुर्मास समिति ने किया।

- डॉ सुनील संचय, प्रकाश अदावन

नैतिक शिक्षण शिविरों का भव्य सामूहिक समापन समारोह संपन्न

नई दिल्ली: दिगंबर जैन नैतिक शिक्षा समिति ने इस वर्ष नैतिक शिक्षण शिविरों का सामूहिक समापन समारोह बाल मंदिर सी. सै. स्कूल, डिफेंस एन्क्लेव- प्रीत विहार के भव्य सभागार में 6 अगस्त को आयोजित किया जो जन-मानस पर गहरी छाप छोड गया। ध्वजारोहण, चित्र अनावरण, दीप प्रज्वलन के बाद डा. अशोक जैन शास्त्री द्वारा सामूहिक पूजन व नन्ही बालिका धृति जैन ने भक्ति नृत्य के साथ शानदार मंगलाचरण किया। समारोह में सौ से भी अधिक छोटे-छोटे बच्चों ने शिविरों में प्राप्त शिक्षा के आधार पर अपराजिता जैन के निर्देशन में बहुत ही प्रेरक, रोचक व शिक्षाप्रद धार्मिक व देशभक्ति कार्यक्रम प्रस्तुत किए। जिन्हे देखकर मुख्य अतिथि विधानसभाध्यक्ष रामनिवास गोयल, दिल्ली के पूर्व मंत्री अरविंदर सिंह लवली, स्कूल के डायरेक्टर योगेश अरोडा, पूर्व पार्षद सुरेंद्र कुमार व अनेक गणमान्य अतिथि भावुक हो गए। रामनिवास गोयल ने अपने उदबोधन में मुक्तकंठ से बच्चों की सराहना करते हुए कहा कि समिति के अध्यक्ष धनपालजी बडे भाई के समान हैं, वे मुझे संत के समान लगते हैं। नैतिक शिक्षा से ही समाज और राष्ट्र उन्नति कर सकता है। इस समिति से मैं भी 20 साल से जुडा हूं, मैने इनसे बहुत कुछ सीखा है। मैं प्याज व लहसुन कभी नही खाता। हमने विधानसभा में महावीर जयंती और क्षमावाणी समारोह मनाना शुरू कर दिया है। एक बार तो दिगंबर संतों के विश्राम की व्यवस्था भी की है। पूरी समिति साधुवाद व बधाई की पात्र है। दिल्ली के पूर्व मंत्री अरविंदर सिंह लवली व स्कूल के डायरेक्टर योगेश अरोडा ने भी समिति के कार्यों की सराहना की। समारोह में विद्वानों, शिविर संयोजको, शरद जैन, रमेश जैन नवभारत टाइम्स व अन्य सहयोगियों को सम्मानित किया गया। संस्था की स्मारिका का विमोचन भी किया गया। जिनराज जैन ने अध्यक्षता की। समारोह का कुशलतापूर्वक संचालन करते हुए शरद जैन ने समिति की स्थापना 1987 से लेकर अब तक की गतिविधियों व उपलब्धियों पर गरिमापूर्ण विडियो फिल्म का प्रदर्शन किया। शिविर संयोजक प्रवीन जैन ने बताया कि इस बार 64 शिविरों में दस हजार से भी अधिक बच्चों को शिक्षा प्रदान की गई।

रमेश जैन, नई दिल्ली

धर्म का पालन करो तो अहंकार, स्वार्थ का त्याग करो, दूसरों से पहले खुद पर विश्वास करो - आचार्य सौरभ सागर

रविवार को आचार्य सौरभ सागर ने अपने आशीर्वचनों में कहा की - आज का प्रत्येक प्राणी धर्म की बात तो करता है किंतु धर्म के बताए मार्ग का पालन बिल्कुल भी नही करता, कोई धर्म किसी का अहित नहीं चाहता और ना ही किसी प्राणी को अहंकारी और स्वार्थी बनने की शिक्षा देता है। जो प्राणी खुद को कमजोर समझते है जो खुद पर विश्वास नहीं करते है वही प्राणी अहंकार और स्वार्थ के रास्तों का पालन करते है। जो धर्म के बताए मार्ग के बिलकुल विपरीत होता है। प्रत्येक प्राणी को धर्म का पालन करना चाहिए और अहंकार, स्वार्थ का त्याग कर दूसरों पर विश्वास करने से पहले खुद पर विश्वास करना चाहिए। जो प्राणी इस मार्ग पर चलते है वह श्रेष्ठ श्रावक और श्रेष्ठ प्राणी बनने के सौभाग्यशाली बनते है।

अभिषेक जैन बिट्टू

Subai Jain Temples Koraput, Odisha

History

The Subai Jain temple complex is a group of five Jain temples built in the 4th century. Subai was a major Jain centre and the Jain temple was built. Jain gemstone traders came to Koraput area for trade. The temples are dedicated to Mahaveer, Parshwanath, Rishabhanath and other pilgrims.

About the temple

The temple was initially constructed with triratha architecture with amalaka. The door boards have carvings of a rosette surrounded by dot squares. A temple is known for its rare pictures of pilgrims. The temple has the image of Rishabhanath in the padmasa meditation pose; surrounded by pilgrims. The statue of the four-armed Goddess (Jain Yakshi) decorated with bangles in the complex of the temple is also notable. Every year, the annual festival is organized by the temple administration. A 4ft (1.2m) Jain statue was discovered during an excavation in 2020.

आचार्य श्री कामकुमार नंदी जी महाराज की नृशंश हत्या के विरोध में जन्तर-मन्तर पर विरोध प्रदर्शन व धरना

17 जुलाई 2023 आचार्य श्री कामकुमार नंदी जी महाराज की नृशंश हत्या के विरोध में स्थानीय जन्तर-मन्तर, संसद मार्ग, नई दिल्ली-1, पर शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन व धरना दिया गया। आक्रोशित एवं स्तब्ध जैन समाज के लगभग 1500 प्रतिष्ठित लोगों ने विरोध प्रदर्शन में भाग लिया। ज्ञातव्य हो कि आचार्य श्री कामकुमार नंदी जी महाराज की दिनांक 5 जुलाई को अपहरण कर चिक्कोडी,बेलगावी(कर्नाटक)में हत्या कर दी गई थी।

राष्ट्रसंत परम्पराचार्य श्री प्रज्ञसागर जी मुनिराज के णमोकार मंत्र के उच्चारण तथा मृतात्मा की स्मृति में एक मिनट का मौन रखने के बाद सभा प्रारंभ हुआ। उन्होनें इस जघन्य हत्या पर खेद प्रकट किया तथा कर्नाटक सरकार से अनुरोध किया कि इस घटना का संज्ञान लेकर दोषियों को शीघ्र सजा दी जाय। इस तरह की निर्मम हत्या राजतंत्र में भी नहीं हुई थी। साथ ही उन्होनें कर्नाटक और सभी राज्य सरकारों से अनुरोध किया कि साधु-संतो की समुचित सुरक्षा की व्यवस्था की जाय। उन्होनें अपने आशीर्वचन में कहा कि देश में शांति साधु-संतों के कारण है। महान सम्राट अशोक के शिलालेख में यह वर्णित है कि साधु-संत की रक्षा सम्पूर्ण देश में होनी चाहिये। वे हमारे देश के धरोहर एवं विरासत है।

महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गजराज जैन गंगवाल ने सभा को संबोधित करते हुये कहा कि कर्नाटक सरकार इस जधन्य हत्या के दोषियों को फास्ट ट्रैक कोर्ट गठित कर कठोतम सजा दे तथा भविष्य में इस तरह की घटना की पुनरावृति न हो इसकी व्यवस्था करे। उन्होने बताया कि आज देश में जैन समाज के लोगों की संख्या लगभग 4 करोड़ है, लेकिन सरकारी आंकड़े इसकी पुष्टि नहीं करते हैं। क्योकि जैन समाज के बहुसंख्यक लोग अपने नाम के साथ जैन नहीं लिखते हैं तथा जनगणना अधिकारी को अपना धर्म जैन धर्म नहीं बताते हैं। सिर्फ कर्नाटक में हमारी संख्या 60 लाख है। हम अहिंसक जरूर हैं, लेकिन सरकार हमें कमतर नहीं आंके।

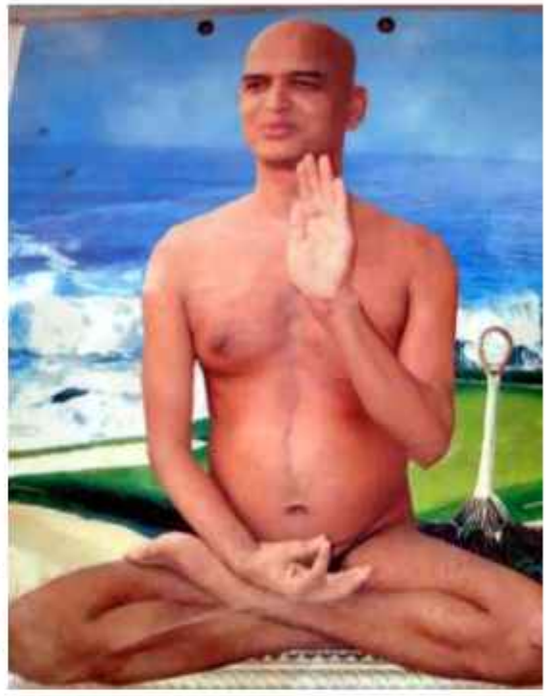

सांसद अनिल जैन ने इस हत्या की निन्दा करते हुये कहा यह विडम्बना और दुर्भाग्यपूर्ण है कि हमें जन्तर-मन्तर पर धरना देना पड़ रहा है। कर्नाटक सरकार को इस जघन्य हत्या की सी.बी.आई. द्वारा जांच करानी चाहिये। उन्होंने जैन समाज से एकत्रित होने का आह्वान किया। जैन समाज एक तेजस्वी समाज है। दिल्ली प्रदेश भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष श्री वीरेन्द्र सचदेवा ने दुर्दान्त हत्या की निन्दा करते हुये कहा कि जैन समाज पूरे देश को दिशा और हिम्मत देता है। इस घटना की पुनरावृति न हो, इसके लिये कानून बनना चाहिए तथा

धटना की सी.बी.आई द्वारा जांच होनी चाहिये। ऐसे हत्यारे के लिये धरातल पर कोई स्थान नहीं होना चाहिए।

महासभा के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री पवन जैन गोधा ने जैन आचार्य जी की हत्या की निन्दा करते हुये कहा आज का दिन हमारे लिये काला दिन है। जो समाज देश को सबसे ज्यादा आय कर तथा युवाओं को सबसे ज्यादा रोजगार देता है, उसे जंतर-मंतर पर विरोध प्रदर्शन करना पड़ रहा है। उन्होनें मांग किया कि कर्नाटक सरकार इस जघन्य हत्या का संज्ञान लेकर दोषियों को कठोर सजा दिलाने हेतु समुचित कदम उठाये तथा जैन समाज में व्याप्त आक्रोश को दूर करे।

सभा में स्वस्तिश्री भट्टारक चारूकीर्ति, स्वस्ति श्री भट्टारक सौरव सेन तिजारा, पीठाधीश रविन्द्र कीर्ति जी, श्री पुनीत जैन,(नवभारत टाइम्स)श्री स्वराज जैन, श्री संदीप जैना, डॉ. निर्मल कुमार जैन, श्री नवीन जैन, श्री राकेश जैन टुडे टी, श्री नरेन भीकूराम जैन, श्री पंकज जैन, प्रभारी भाजपा,(शाहदरा),श्री जिनेश कोठिया, श्रीमती सुनन्दा जैन, योगाचार्य श्री नवीन जी आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किये। महासभा के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री पवन गोधा ने सभी अतिथियों व समाजसेवियों का आभार व धन्यवाद ज्ञापित किया।

- स्वराज जैन

दिगंबर जैनाचार्य कामकुमारनंदीजी गुरुदेव की हत्या का विरोध में २० जुलाई २०२३ को देश भर में हुआ विरोध प्रदर्शन

जैन समाज ने मूक मोर्चा निकालकर सौंपा ज्ञापन (कर्नाटक के चित्रों सहित)

जैनाचार्य कामकुमारनंदी जी महाराज
की कर्नाटक में नृशंस हत्या के विरोध में

जब तक सूरज चांद रहेगा। मुनियों का सम्मान

दिगम्बर जैन आचार्य 108 श्री कामकुमार नन्दी जी महाराज

10000+ जनसैलाब
सकल जैन समाज उदयपुर
आचार्य शिरोमणि श्री वर्धमान सागर जी महाराज के मार्गदर्शन में एक जैन मुनि की हत्या होने पर उचित न्याय हेतु सकल जैन समाज उदयपुर ने जिला कलेक्टर को सौपा ज्ञापन..

धर्मगुरूओं की रक्षा
भारतीय संस्कृति की सुरक्षा

मध्यप्रदेशीय जैन समाज का बन्द पूर्ण सफल : राज्यपाल को सौंपा विरोध का ज्ञापन

कर्नाटक में हुई जैन मुनि की नृशंस हत्या के विरोध में भारत बन्द के साथ मध्यप्रदेश में भी बीस जुलाई का बन्द पूर्णतय: सफल रहा। जैनियों के साथ अन्य समाजों ने भी बन्द कर उक्त हिंसा की भर्त्सना की व आक्रोश जताया। वृहद वाहन रैली के अलावा जुलूस आदि अन्य कार्यक्रमों के साथ संध्या को महामहिम राज्यपाल को, राष्ट्रपति के नाम का ज्ञापन जैन समाज के मुख्य पदाधिकारियों ने राजभवन जाकर सौंपा। प्रतिनिधि मण्डल का नेतृत्व प्रतिष्ठित पद्म श्री साहित्यकार डॉ. कैलाश मड़बैया...राष्ट्रीय अध्यक्ष 'अनेकान्त' ऐकेडमी ने किया व सामाजिकों को ज्ञापन बावत् सम्बोधित किया। स्मार्ट सिटी भोपाल के अध्यक्ष श्री अमर जैन ,मनोज जैन बॉगा अध्यक्ष चौक कमेटी, अरविन्द फुसकेले सागर जैन समाज, राकेश जैन अनुपम नेहरु नगर जिनालय, सुषमा जैन महिला मण्डल प्रतिनिधि और देवेन्द्र जैन जैन युवा मण्डल.. प्रतिनिधि आदि अनेकानेक पदाधिकारीगण शामिल हुये। माननीय राज्यपाल के प्रतिनिधि वरिष्ठ सुरक्षा अधिकारी श्री अभिषेक शर्मा ने ज्ञापन प्राप्त कर यथाशीघ्र कार्यवाही कराने के लिये आश्वस्त किया। कतिपय संगठनों ने सांसद, कलेक्टर आदि को भी ज्ञापन दिये।

RNI-MAHBIL/2010/33592
Published on 1st of every month
License to post without prepayment -
WPP No. MR/Tech/WPP-90/South/2022-24
Jain Tirth vandana, English-Hindi August 2023
Posted at Mumbai Patrika Channel, Mumbai GPO Sorting Office
Mumbai-400001, Regd. No. MCS/160/2022-24
Posted on 16th and 17th of every month

With Compliments

From:

GFL

GUJARAT FLUOROCHEMICALS LTD.

(Company of Siddho Mal-Inox Group)

INOX

GROUP OF COMPANIES

Corporate office :
INOX Towers, 17, Sector 16-A,
NOIDA - 201 301 (U.P.)
Tel: 0120-614 9600
Email : contact@gfl.co.in

New Delhi Office :
612-618, Narain Manzil, 6th Floor,
Barakhamba Road,
New Delhi - 110 001
Tel: +91-11-23327860
Email : siddhomal@vsnl.net

Printed and Published by UMANATH RAMAJOR DUBEY on behalf of BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN TIRTHKSHETRA COMMITTEE, Printed at TRIMURTI PRINTERS, 5/7 DADARKAR BUILDING, V P ROAD, C P TANK, MUMBAI-400 004 and Published from BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN TIRTHKSHETRA COMMITTEE, HIRABAUG, 2ND FLOOR, C P TANK, MUMBAI-400 004. Editor : UMANATH RAMAJOR DUBEY